ओ३म्

आर्य जगत्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

रविवार, 09 जनवरी 2020

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र

सप्ताह रविवार, 09 फरवरी 2020 से 15 फरवरी 2020

माघ शु. – 15 ● वि० सं०–2076 ● वर्ष 62, अंक 06, प्रत्येक मंगलवार को प्रकाश्य, दयानन्दाब्द 195 ● सृष्टि–संवत् 1,96,08,53,120 ● पृ.सं. 1–12 ● इस अंक का मूल्य – 2.00 रुपये

डी.ए.वी. सैक्टर-49 गुरुग्राम में 'सी.बी.एस.ई.-इंटेल ए आई-थोन'

विद्यार्थियों को नई तकनीकों से अवगत कराने और इनके उपयोगों की जानकारी देने के लिए इंटेल ने सीबीएसई के सहयोग से 10वीं 'सी.बी.एस.ई. – इंटेल ए आई–थोन' का आयोजन गुरुग्राम में किया, जिसकी मेजबानी डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, सेक्टर–49, गुरुग्राम द्वारा की गई।

मनुष्य की बुद्धि सदैव से ही आवश्यकतानुसार नए–नए आविष्कार करती रहती है। इसके साथ जब तकनीक जुड़ जाती है तो ये आविष्कार जीवन को और भी सहज बना देते हैं। कृत्रिम बुद्धिमत्ता और सोफ्टवेयर के सहयोग से हम कई लाभ उठा सकते हैं। औपचारिक शिक्षा पद्धति में जिन उद्देश्यों के साथ कृत्रिम बुद्धिमत्ता के विषय को शामिल किया गया है, उसे ध्यान में रखते हुए तथा छात्रों को इसके लिए तैयार करने हेतु नियमित अन्तराल पर ए आई–थोन का आयोजन किया जाता है।

इस कार्यशाला में दिल्ली, हरियाणा, राजस्थान व उत्तर प्रदेश के 28 अलग–अलग विद्यालयों से 58 विद्यार्थियों ने पूरे उत्साह के साथ भाग लिया। तीन दिवसीय इस कार्यशाला में विद्यार्थियों ने कृत्रिम बुद्धिमता से जुड़ी हुई कई गतिविधियाँ व प्रयोग किए जिससे उनकी

शेष पृष्ठ 11 पर

आर्य समाज नकोदर व डी.ए.वी. संस्थाओं ने निकाली विशाल शोभा यात्रा

आर्य समाज नकोदर व अलग–अलग डी.ए.वी. शैक्षणिक संस्थाओं द्वारा महर्षि दयानन्द सरस्वती के उपदेशों को घर–घर तक पहुँचाने और के.आर.एम. डी.ए.वी. कॉलेज, नकोदर की 50वीं वर्षागांठ को समर्पित विशाल शोभा यात्रा आयोजित की गई। इस शोभा को पंजाब वाटर रिसोर्सिस मैनेजमैंट एंड डिवैल्पमैंट कार्पोरेशन के चेयरमैन जगबीर सिंह बराड़ व आर्य समाज नकोदर के प्रधान एस.डी. मेहता ने रवाना किया।

मुख्यातिथि जगबीर सिंह बराड़ ने शोभा यात्रा के प्रबंधकों को बधाई देते कहा कि ऐसे कार्य आपसी भाईचारे को बढ़ाते है और समाज को सही दिशा प्रदान करते हैं। उन्होंने कहा कि विशाल शोभा यात्रा में नारी व सामाजिक भलाई के पहलूओं को उजागर किया गया है, जो कि समय की प्रमुख जरूरत है।

स्थानीय कॉलेज से शुरू होकर शोभा यात्रा शहर के अलग–अलग बाजारों व मोहल्लों में से गुजरी, जहाँ शहर वासियों द्वारा स्वागत किया गया और अनेकों प्रकार के लंगर लगाए गए। शोभा यात्रा में एस.आर.टी. डी.ए.वी. स्कूल बिलगा, भारतीय गोपाल माडल स्कूल, एम.डी. दयानन्द माडल स्कूल, ए.एस. सीनियर सैकंडरी स्कूल, जनता गर्लज हाई स्कूल, टैगोर माडल स्कूल, अकाल स्कूल, धनाल

शेष पृष्ठ 11 पर

बी.बी.के. डी.ए.वी. अमृतसर ने राष्ट्रीय सेवा योजना शिविर लगाकर मनाया स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस पर महाविद्यालय के राष्ट्रीय सेवा योजना विभाग (एन.एस.एस.) द्वारा आठ दिवसीय विशेष शिविर का आयोजन किया गया।

शिविर का शुभारम्भ आर्य समाज के दो कर्मठ वीरों पंडित राम प्रसाद बिस्मिल एवं स्वामी श्रद्धानन्द जी की स्मृति और राष्ट्रहित में उनके बलिदान का स्मरण करते हुए वैदिक यज्ञ से किया गया।

यज्ञ के पश्चात् महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ. पुष्पिन्दर वालिया ने माननीय अतिथियों का अभिनंदन करते हुए कहा कि एन.एस.एस. का माटो 'नॉट मी बट यू' आर्य समाज के पवित्र नियमों से प्रेरित है। जिनमें तीसरे नियम के पश्चात् निस्वार्थ समाज सेवा की बात कही गयी है। उन्होंने बताया कि यज्ञ करना मात्र एक बाहरी क्रिया नहीं है अपितु पूर्णतः वैज्ञानिक क्रिया है और वर्तमान समय में यह अत्यंत प्रासंगिक भी है। उन्होंने कहा कि हमारे भीतर भी एक यज्ञ निरंतर चलता रहता है, और यह यज्ञ हमारी आत्मा को शुद्ध कर हमारे चरित्र को ऊँचा उठाता है। उल्लेखनीय है कि महाविद्यालय में दैनिक यज्ञ की परम्परा इसके स्थापना दिवस से ही चल रही है। इस अवसर पर प्राचार्या जी ने भारत के दो महान् शहीद–पं. राम प्रसाद बिस्मित और महात्मा श्रद्धानन्द सरस्वती जी की शहादत को स्मरण करते हुए अपने श्रद्धासुमन अर्पित किये।

स्वजातीय या विजातीय ईश्वर अथवा अपने आत्मा में तत्त्वान्तर वस्तुओं से रहित एक होने से वह 'अद्वैत' है। – स. प्र. समु. १

संपादक – पूनम सूरी

ओ३म्
आर्य जगत्
सप्ताह रविवार, 09 फरवरी 2020 से 15 फरवरी 2020

हम तेरे सम्मुख मूढ़ हैं

● डॉ. रामनाथ वेदालंकार

मूरा अमूर न वयं चिकित्वो, महित्वमग्ने त्वमङ्ग वित्से।
शये वव्रिश्चरति जिह्वयाऽदन्, रेरिह्यते युवतिं विश्पतिः सन्।।

ऋग् १०.४.४

ऋषिः **त्रितः आप्त्यः**। देवता **अग्निः**। छन्दः **त्रिष्टुप्**।

● (**अङ्ग**) हे, (**अमूर**) अमूढ़, (**चिकित्वः**) ज्ञानी, (**अग्ने**) परमेश्वर!, (**मूराः**) मूढ़, (**वयं**) हम, (**महित्वं**) महत्ता को, (**न**) नहीं [जान पाते]।, (**त्वं**) तू, (**वित्से**) जानता है। [हमारा], (**वव्रिः**) रूपवान् आत्मा, (**शये**) सोया पड़ा है, (**जिह्वया**) जिह्वा [आदि इन्द्रियों] से, (**अदन्**) भोग करता हुआ, (**चरति**) विचरता है, (**विश्पतिः सन्**) राजा होता हुआ [भी], (**युवतिं**) प्रकृति–रूप युवति को, (**रेरिह्यते**) अतिशय पुनः–पुनः चाट रहा है।

● हे अग्ने! हे तेजोमय ज्ञानी प्रभु! हम मूढ़ हैं, तुम अमूढ़ हो। हम तो यह भी नहीं जानते कि 'महत्ता' किसका नाम है, महत्त्व प्राप्त करना किसे कहते हैं। हम तो समझते हैं कि सांसारिक दृष्टि से महिमाशाली होना, हाथी, घोड़े, रथ, सेवक आदि का स्वामी हो जाना ही महत्ता है। हमारा तो विचार है कि नचिकेता को यम ने जिस सांसारिक धन–दौलत, पुत्र–पौत्र, भूमि के राज्य आदि सम्पत्ति के प्रलोभन में फँसाना चाहा था, उस सम्पत्ति को पा लेना ही महत्ता है। पर हम मूढ़ अज्ञानियों के ऊपर रहनेवाले अमूढ़ ज्ञानी तुम जानते हो कि सच्ची 'महत्ता' क्या है।

हमारा रूपवान् आत्मा सोया पड़ा है, उसे यही चेतना नहीं है कि मैं किसलिए इस शरीर में आया हूँ, मेरा लक्ष्य क्या है मुझे किधर जाना है। वह जिह्वा आदि इन्द्रियों से निरन्तर भोगों को भोगने में आसक्त हुआ विचर रहा है और इस भोग भोगने में ही अपने जीवन की इतिश्री मान बैठा है। भगवान् ने उसे 'विश्पति' बनाया है, शरीर–नगरी का राजा बनााया हैं, जिसमें मन, बुद्धि, प्राण, इन्द्रियाँ आदि अनेक प्रजाएँ निवास करती हैं। उसे इस शरीर–नगरी को ईश्वरीय साम्राज्य बनाना चाहिए था, अध्यात्म–साधना द्वारा आध्यात्मिक दृष्टि से उन्नत राष्ट्र बनाना चाहिए था। शरीर–राष्ट्र को भोगों से जर्जर न कर सबल, सप्राण और समनस्क करना चाहिए था। पर धिक्कार है इस आत्मा को! यह तो एक 'युवति' को चाट रहा है, अतिशय पुनः–पुनः चाट रहा है। प्रकृति ही यह युवति है जो नटी बनकर आत्मा को अपने साथ नचा रही है, भोग भुगा रही है। आत्मा प्रकृति को चाट रहा है, प्रकृति आत्मा को चाट रही है। इस प्रकार आत्मा लौकिक भोग–विलासों में आनन्द ले रहा है।

हे मेरे आत्मन्! इस मूढ़ता को त्यागो, अपने अन्दर ज्ञान की ज्योति जगाओ, 'सच्ची महत्ता क्या है' इसे जानो, सोते से उठ खड़े हो, इन्द्रियों के वशीवर्ती न हो, अपितु इन्द्रियों के स्वामी बनो। प्रकृति को न चाटकर परम प्रभु के अमृत–रस का आस्वादन करो। तुम्हारा उद्धार होगा, तुम महिमाशाली बन जाओगे। ❑

वेद मंजरी से

इस अंक में प्रकाशित सभी लेखों में व्यक्त भावों व विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं और इसमें किसी आपत्तिजनक बात के लिए 'सम्पादक' एवं 'आर्य जगत्' उत्तरदायी नहीं होगा।

प्रभु दर्शन

● महात्मा आनन्द स्वामी

पिछले अंक में महात्मा आनन्द स्वामी ने बताया कि योग द्वारा आत्म–दर्शन ही परम धर्म है। 1939 से 1950 ग्यारह बरस बीत गये। मैंने देश की वर्तमान अवस्था का अध्ययन किया। देश के बाहर भी निगाह दौड़ाई। आर्यसमाज, सनातन धर्म कांग्रेस, हिन्दू महासभा, समाजवादी दल, साम्यवादी दल आदि सभी आन्दोलनों तथा विचारधाराओं का विश्लेषण किया। संसार की बड़ी–बड़ी शक्तियाँ–अमेरिका, रूस, ब्रिटेन आदि के कार्यक्रमों को तर्क के तराजू पर तोला और बुद्धि की कसौटी पर परखा। सभी का ध्येय एक है–संसार में शान्ति का राज्य हो। इसी कामना से सभी प्रयत्न कर रहे हैं, परन्तु सफलता किसी को भी नहीं मिल रही। यदि कभी क्षणिक सफलता मिलती भी है, तो असफलता के दुर्गन्धयुक्त कीचड़ से लथपथ। क्या संसार में सफलता मिल ही नहीं सकती? क्या संसार दुःख का दूसरा नाम है? क्या सुख और शान्ति काल्पनिक जगत् के स्वप्न में हैं?

–अब आगे...

यह प्रश्न निरन्तर मेरे मन में था–तब भी जब मैं साधना में रहता और तब भी जब मैं शास्त्रों का मनन करता। मैं वेद, उपनिषद्, दर्शन सभी के मन्त्रों तथा सूत्रों में इस प्रश्न का उत्तर खोजता रहा। तपोवन में श्री पण्डित रामअवतार जी वेदतीर्थ से मैंने योग–दर्शन पढ़ा। ऋषिकेश में श्री स्वामी ब्रह्मचारी चैतन्यस्वरूप के चरणों में सांख्यकारिका का अध्ययन किया। सागर–तल से दस हज़ार फीट की ऊँचाई पर गंगोत्री मे योगनिष्णात योगिराज ब्रह्मचारी स्वामी व्यासदेव जी की पवित्र वाणी से सांख्यदर्शन की शिक्षा प्राप्त की। इन सब अवसरों और स्थानों पर मेरे मन में यही प्रश्न गूंजता रहा। मैं इसी उलझन को सुलझाने में लगा रहा। हर बार, हर जगह, हर पुस्तक में, एक ही उत्तर मिला–आत्म दर्शन तथा प्रभु दर्शन के बिना लोक सेवा अथवा विश्व कल्याण के सब प्रयत्न असफल रहेंगे।

महर्षि स्वामी दयानन्द जी सरस्वती ने आर्य समाज के नियमों में आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य संसार का उपकार करना बतलाया है। इसका साधन भी उन्होंने बतलाया–"शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।" आर्य समाज के नेताओं तथा सेवकों ने शारीरिक तथा सामाजिक उन्नति के लिए भरसक प्रयत्न किया। समाज सुधार तथा देश उद्धार की अनेक योजनाएँ भी बनाई। राष्ट्र–निर्माण के लिए गुरुकुल, कॉलेज, स्कूल, पाठशालाएँ, अनाथालय, विधवाश्रम और शिल्प–विद्यालय खोल, पीड़ितों–दलितों की सहायता का काम किया। बड़े लोगों ने पूर्ण त्याग करके अपने जीवन इसी उद्देश्य की पूर्ति में लगा दिए। धन्य हैं वे लोग, जिन्होंने समाज तथा देश सेवा में जीवन की आहुतियाँ दे डालीं। इस मार्ग पर बढ़ते हुए यदि राह में अंग्रेज़ों के बिछाये काँटे भी आए तो निर्भयता से आगे बढ़ते रहे, चिन्ता नहीं की। यदि किसी ने छुरे, लाठी, पिस्तौल से प्राणों का अन्त कर दिया, तो भी परवाह नही की। 76 से अधिक महानुभावों ने इसी प्रकार अपने जीवन–प्राणों की आहुति दे डाली। उन शहीदों और सेवकों की स्मृति ने माथा अपने–आप झुक जाता है। परन्तु इस शारीरिक और सामाजिक उन्नति के साथ यदि आत्मिक उन्नति की ओर इतना ही ध्यान दिया जाता तो आज जो असन्तोष, उदासीनता और निराशा दिखाई देती है, वह दिखाई न देती। आत्मिक उन्नति से जो सफलता प्राप्त हो सकती थी, वह भी प्राप्त हो जाती। महर्षि ने तो सामाजिक उन्नति का कार्य तीसरे स्थान रखा था और आत्मिक उन्नति को दूसरा दिया था, परन्तु आर्य कार्यकर्ताओं ने आत्मा की ओर अधिक ध्यान दिया था। न देकर, सामाजिक कार्यों की ही ओर अधिक ध्यान दिया। क्रम–विरुद्ध कार्य करने को जो परिणाम हो सकता था, वही हुआ। आर्य समाज के प्रयत्नों से शारीरिक तथा सामाजिक उन्नति तो कुछ हो गई, परन्तु कुछ ध्येय प्राप्त न हो सका, मानव अशान्त ही रहा।

यही अवस्था देश की सबसे बड़ी राजनैतिक संस्था 'इण्डियन नेशनल कांग्रेस' की हुई। कांग्रेस ने देश को सुखी बनाने के लिए बहुत बड़े आन्दोलन को जन्म दिया। कांग्रेस का उद्देश्य आज़ादी प्राप्त करना था। आज़ादी अर्थहीन है, यदि उससे देश सुखी न हो। आज़ादी प्राप्त करने के लिए भारत के सभी लोगों ने बड़े–बड़े बलिदान दिये। स्वतन्त्रता के तुमुल संग्राम में नवयुवक फाँसी के रस्सों पर झूल गये। देवियों ने अपने पतियों की आहुतियाँ देकर आजीवन घोर यातनाएँ सहन की। बच्चों और बूढ़ों ने कष्टों तथा विपत्तियों को निमन्त्रण दिया।

शेष पृष्ठ 04 पर ☞

मांस–भक्षण और ऋषि दयानन्द

● पं. गंगा प्रसाद उपाध्याय

श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज न केवल स्वयं ही मांस भक्षण नहीं करते थे, अपितु मांस–भक्षण को वेद–विरुद्ध, अनाचार तथा पाप समझते थे। यह बात उनके ग्रन्थों से इतनी स्पष्ट है कि सन्देश अथवा विवाद के लिए कोई स्थान ही नहीं है। सत्यार्थ प्रकाश में हमें 32 ऐसे स्थान मिले हैं जहाँ मांस–भक्षण–निषेध का थोड़ा–बहुत संकेत है। इनको हम कई कोटियों में बाँट सकते हैं–

(1) मांस–भक्षण पाप है। (देखो सं. 2, 6, 8, 13, 19)

(2) मांस–भक्षण वेदविरुद्ध है। (सं. 3, 15, 17, 27)

(3) मांस–भक्षण का दोष वेदों के सिर उन लोगों ने मँढ़ा है जो वाममार्गी थे। (14, 15, 16, 17, 20, 21, 22)

(4) मांस–भक्षण मनुष्य–जाति के लिए अहितकर है। (देखो सं. 9, 10)

(5) मांस–भक्षण से अन्य गुण भी नष्ट हो जाते हैं। (सं. 10, 24, 25, 26)

(6) मांस–भक्षण की प्रथा विधर्मियों ने फैलाई है। (सं. 10, 12, 24, 29)

(7) यज्ञों में पशु हिंसा विहित नहीं है। (सं. 18)

(8) मांस–भक्षण घृणित कर्म है। (सं. 28, 30, 31, 32)

(1) माता, पिता, आचार्य अपने सन्तान और शिष्यों को सदा सत्य उपदेश करें और यह भी कहें कि...मद्य–मांसादि के सेवन से अलग रहें। (समुल्लास 2)

(2) ब्रह्मचारी और ब्रह्मचारिणी मद्य–मांस... आदि कुकर्मों को सदा छोड़ दें। (समु. 3)

(3) जब मांस का निषेध है तो सर्वदा ही निषेध है। (समु. 4)

(4) मद्य–मांसादि–वर्जित होकर सदा विचरता रहे। (समु. 5, संन्यास प्रकरण)

(5) जैसे सिंह वा मांसाहारी–हृष्ट–पुष्ट पशु को मारकर खा लेते हैं वैसे (राष्ट्रीय विशमत्ति) स्वतन्त्र राजा प्रजा का नाश करता है। (समु. 6)

(6) जो लोग मांस–भक्षण और मद्यपान करते हैं उनके शरीर और वीर्यादि धातु भी दुर्गन्धादि से दूषित होते हैं इसलिए उनके सङ्ग करने से आर्यों को भी यह कुलक्षण न लग जाएँ यह तो ठीक है। परंतु इनसे व्यवहार और गुण ग्रहण करने में कोई भी दोष व पाप नहीं है, किन्तु इनके मद्यपानादि दोषों को छोड़ गुणों को ग्रहण करें। (समु. 10)

(7) हाँ, इतना अवश्य चाहिए कि मद्य–मांस का ग्रहण कदापि भूलकर भी न करें। (समु. 10)

(8) हाँ, मुसलमान, ईसाई आदि मद्य–मांसाहारियों के हाथ के खाने में आर्यों को भी मद्य–मांसादि खाना–पीना अपराध पीछे लग पड़ता है। (समु. 10)

(9) मद्य–मांसाहारी म्लेच्छ कि जिनका शरीर मद्य–मांस के परमाणुओं ही से पूरित है, उनके हाथ का न खाएँ। जिसमें उपकारी प्राणियों की हिंसा अर्थात् जैसे एक गाय के शरीर से दूध, घी, बैल, गाय उत्पन्न होने से एक पीढ़ी में चार लाख पचहत्तर सहस्र छः सौ मनुष्यों को सुख पहुँचता है वैसे पशुओं को न मारें न मारने दें। ... बकरी के दूध से 25920 (पच्चीस सहस्र नौ सौ बीस) आदमियों का पालन होता है। वैसे हाथी, घोड़े, ऊँट, भेड़, गदहे आदि से भी बड़े उपकार होते हैं। इन पशुओं को मारनेवालों को सब मनुष्यों की हत्या करनेवाले जानियेगा। (समु. 10)

(10) जब से विदेशी मांसाहारी इस देश में आकर गौ आदि पशुओं को मारनेवाले मद्यपानी राज्याधिकारी हुए हैं तब से क्रमशः आर्यों के दुःख की बढ़ती होती जाती है। (समु. 10)

(11) **प्रश्न**–जो सभी अहिंसक हो जाएँ तो व्याघ्रादि पशु इतने बढ़ जाएँ कि सब गाय आदि पशुओं को मार खाएँ, तुम्हारा पुरुषार्थ ही व्यर्थ हो जाय।

उत्तर–यह राजपुरुषों का काम है कि जो हानिकारक पशु व मनुष्य हों उनको दण्ड दें और प्राण से भी वियुक्त कर दें।

प्रश्न–फिर क्या उनका मांस फेंक दें?

उत्तर–चाहे फेंक दें चाहे कुत्ते आदि मांसाहारियों को खिला दें व जला दें, अथवा कोई मांसाहारी खाए तो भी संसार की कुछ हानि नहीं होती, किन्तु उस मनुष्य का स्वभाव मांसाहारी होकर हिंसक हो सकता है। जितना हिंसा और चोरी, विश्वासघात, छल–कपट आदि से पदार्थों को प्राप्त होकर भोग करना है वह अभक्ष्य और अहिंसा धर्मादि कर्मों से प्राप्त होकर भोजनादि करना भक्ष्य है। (समु. 10)

(12) देखो! महाराज युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में भूगोल के राजा, ऋषि–महर्षि आए थे। एक ही पाकशाला में भोजन किया करते थे। जब से ईसाई, मुसलमान आदि मत–मतान्तर चले, आपस में वैर–विरोध हुआ। उन्हीं ने मद्यपान, गोमांसादि का खाना–पीना स्वीकार किया, उसी समय से भोजनादि में बखेड़ा हो गया। (समु. 10)

(13) इससे देश में विद्या, सुशिक्षा नष्ट होकर दुर्गुणता और दुष्ट व्यसन बढ़ जाते हैं, जैसे कि **मद्य–मांसादि सेवन...** (समु. 11)

(14) पश्चात् जब विषयासक्त हुए तो **मांस–मद्य का सेवन** गुप्त–गुप्त करने लगे। पश्चात् उन्हीं में से एक वाममार्ग खड़ा किया। (समु. 11)

(15) अर्थात् देखो इन गवर्गण्ड पोपों की लीला कि जो **वेद–विरुद्ध महा अधर्म** के काम है उन्हीं को श्रेष्ठ वाममार्गियों ने माना। **मद्य, मांस, मीन अर्थात् मच्छी...** (समु. 11)

(16) एक पात्र में मद्य भर के मांस और बड़े आदि एक स्थाली में धर रखते हैं। (समु. 11)

(17) 'प्रोक्षित' अर्थात् यज्ञ में मांस खाने में दोष नहीं ऐसी पामरपन की बात वाममार्गियों ने चलाई हैं। उनसे पूछना चाहिए कि जो वैदिकी हिंसा–हिंसा न हो तो तुझ और तेरे कुटुम्ब को मार के होम कर डालें तो क्या चिन्ता है? मांस भक्षण करने, मद्य पीने, परस्त्री–गमन करने आदि में दोष नहीं है यह कहना छोकड़ापन है। क्योंकि बिना प्राणियों के पीड़ा दिये मांस प्राप्त नहीं होता, और बिना अपराध के पीड़ा देना धर्म का काम नहीं। मद्यपान का तो सर्वथा निषेध ही है। क्योंकि अब तक वाममार्गियों के बिना किसी ग्रन्थ में नहीं लिखा, किन्तु सर्वत्र निषेध है और बिना विवाह के मैथुन में भी दोष है, इसको निर्दोष कहनेवाला सदोष है। ऐसे–ऐसे वचन भी ऋषियों के ग्रन्थ में डाल के कितने ही ऋषि–मुनियों के नाम से ग्रन्थ बनाकर गोमेध, अश्वमेध नाम के यज्ञ भी कराने लगे थे, अर्थात् इन पशुओं को मारकर होम करने से यज्ञमान और पशु को स्वर्ग की प्राप्ति होती है। ऐसी प्रसिद्धि का निश्चय तो यह है कि जो ब्राह्मणग्रन्थों में अश्वमेध, गोमेध, नरमेध आदि शब्द हैं उनका ठीक–ठीक अर्थ नहीं जाना है, क्योंकि जो जानते तो ऐसा अनर्थ क्यों करते? (समु. 11, पृ. 379)

(18) **प्रश्न**–यज्ञकर्त्ता कहते हैं कि यज्ञ करने से यजमान और पशु स्वर्गगामी तथा होम करके फिर पशु को जिन्दा करते थे यह बात सच्ची है व नहीं?

उत्तर–नहीं, जो स्वर्ग को जाते हों तो ऐसी बात कहनेवाले को मार कर होम कर स्वर्ग में पहुँचना चाहिए व उसके प्रिय माता–पिता, स्त्री और पुत्रादि को मार होम कर स्वर्ग में क्यों नहीं पहुँचाते? वा वेदी में से पुनः क्यों नहीं जिला लेते हैं? (समु. 11, पृ. 380)

(19) नववाँ–दुष्ट पुजारियों को धन देते हैं, वे उस धन को वेश्या, परस्त्रीगमन, मद्य, मांसाहार, लड़ाई–बखेड़ों में व्यय करते हैं जिससे दाता का सुख का मूल नष्ट होकर दुःख होता है। (समु. 11, पृ. 421, प्रकरण–मूर्तिपूजा के दोष)

(20) इत्यादि मन्त्र जपते, मद्य–मांसादि यथेष्ट खाते–पीते, भृकुटी के बीच में सिन्दूर–रेखा देते, कभी–कभी काली आदि के लिए किसी आदमी को पकड़ मार, होम कर कुछ–कुछ उसका मांस खाते भी हैं। जो कोई भैरवी चक्र में जाए, मद्य–मांस न पीए न खाए तो उसको मार होम कर देते हैं। उनमें से जो अघोरी होता है वह मृत मनुष्य का भी मांस खाता है। अजरी–बजरी करनेवाले विष्ठा–मूत्र भी खाते–पीते हैं। (समु. 11, पृ. 472, वाममार्गियों के दोष)

(21) और जो मांस खाता है वह भी उन्हीं वाममार्गी टीकाकारों की लीला है। इसलिए उनको राक्षस कहना उचित है। परन्तु वेदों में कहीं मांस का खाना नहीं लिखा। इसलिए इत्यादि मिथ्या बातों का पाप उन टीकाकारों को और जिन्होंने वेदों के जाने–सुने बिना मनमानी निन्दा की है निःसन्देह उनको लगेगा। (समु. 12, पृ. 545)

(22) परन्तु बौद्धों में वाममार्गी मद्य–मांसाहारी बौद्ध हैं। (समु. 12, पृ. 558)

(23) इनका दयाधर्म कथन–मात्र है जो है सो क्षुद्र जीवों और पशुओं के लिए है, जैन–भिन्न मनुष्यों के लिए नहीं। (समु. 12, पृ. 589)

(24) क्या एक को प्राण–कष्ट देकर दूसरों को आनन्द कराने से दयाहीन ईसाइयों का ईश्वर, नहीं है? जो माता–पिता एक लड़के को मरवाकर दूसरे को खिलाएँ तो महापानी नहीं हैं? इसी प्रकार यह बात है। क्योंकि ईश्वर के लिए सब प्राणी पुत्रवत् हैं, ऐसा न होने से इनका ईश्वर कसाईवत् काम करता है और सब मनुष्यों को हिंसक भी इसी ने बनाया है, इसलिए ईसाइयों का ईश्वर निर्दय होने से पापी क्यों नहीं? (समु. 13, पृ. 641)

(25) अब देखिए, सज्जन लोगो! जिनका ईश्वर बछड़े का मांस खाए उसके उपासक गाय बछड़े आदि पशुओं को क्यों छोड़ें? जिसको कुछ दया नहीं और मांस के खाने में आतुर रहे, वह बिना हिंसक मनुष्य के ईश्वर कभी हो सकता है? (समु. 13, पृ. 643)

शेष पृष्ठ 05 पर ☞

राष्ट्रधर्म से देश को एक मजबूत सूत्र में कैसे बाँधा जा सकता है

● डॉ. चन्द्रशेखर लोखंडे

हैदराबाद रियासत में सन् 1935–36 के आसपास प रामचन्द्र देहलवी जो आर्य समाज के विद्वान और शास्त्रार्थ महारथी थे वे हैदराबाद गए। उनके एक मास तक वहाँ भाषण हुए। एक बार उन्होंने निजाम को चुनौती देकर कहा था कि यदि निजाम मीरउस्मान अली खाँ एक मास तक मेरा भाषण सुनलें तो मैं दावे के साथ कह सकता हूँ कि वे इस्लाम छोड़कर वैदिक धर्म अपना लेंगे। जब यह बात रियासत के प्रधान मंत्री राजा किशन प्रसाद को पता चली तो उन्होंने पं. रामचन्द्र देहलवी को अपने राजमहल में बुला लिया। महाराजा किशन प्रसाद इस्लाम से बहुत प्रभावित थे और वे इस्लाम की तरफ झुक रहे थे। वे शुक्रवार की नमाज़ पढ़ते थे। रोजा रखते थे। वे इस्लाम के इतने करीब पहुँच गए थे कि उन्होंने अपने बेटे का नाम ख्वाजा प्रसाद रख दिया था। पं. देहलवी जी की खातिरदारी के पश्चात् महाराजा ने कहा कि आप अपने भाषणों में इस्लाम की नुक्ताचीनी करते हैं। इस पर पंडितजी ने कहा कि मैं जो सत्य है उसी को कहता हूँ नुक्ताचीनी का सवाल ही नहीं आता। बात को बीच में ही काटकर पंडित जी ने पूछा कि ''मैंने सुना है आप इस्लाम की तरफ झुक रहे हैं? क्या वजह है कि आप हिंदू होकर भी इस्लाम की ओर आकर्षित हो रहे हैं, तब रियासत के सदर महाराजा किशनप्रसाद ने कहा–''जब मैं रियासत के हिन्दुओं को देखता हूँ तो हैरान हो जाता हूँ। यहाँ की हिन्दू जनता भगवान के नाम पर पत्थरों को पूजती है।

कोई दरख्तों को पूज रहा है कोई पानी और पेड़ पौधों को पूज रहा है, कोई इन्सानों को पूज रहा है! यह सब देखकर मैं हैरान और निराश हो जाता हूँ और आप दूसरी तरफ इस्लाम को देखिए यहाँ एक अल्लाह के सिवाय किसी की इबादत करना हराम है। सभी एक अल्लाह को मानने वाले है अल्लाह के सिवा किसी की इबादत नहीं करते। आप किसी भी देश में जाइए, किसी मस्जिद में जाइए सभी मुस्लमान एक ही अल्लाह को मानने वाले हैं। पंडित रामचन्द्र देहलवी ने कहा कि–महाराजाजी। क्या आपके राजपुरोहितों ने यह बात नहीं बतलाई कि वेदों में अनेक देवी देवता नहीं है वहाँ केवल एक ही ईश्वर पूजा की बात कही गयी है। महाराजा ने कहा–'यह बात तो अब तक किसी ने नहीं कही पंडित जी ने कहा–महाराजाजी! राजपुरोहितों की बात छोड़ दीजिए वे क्या वेदों को देखेंगे और पढेंगे? मैं आपसे कहता हूँ कि वहाँ तो केवल एक ईश्वर की बात कही गयी है, सुनिए–**न द्वितीयो न तृतीयो चतुर्थी नापि उच्यते**–अर्थात्–वह न दूसरा है न तीसरा है न चौथा है न दसवाँ है, स एक एव एक वृदेक एव'' अर्थात् वह एक ही है और वास्तव में वह एक ही है। इतना मुकम्मल सिद्धान्त वेदों में है यह आपको अब तक किसी ने नहीं बताया। यह हमारा दुर्भाग्य है जितना वेदों में एकेश्वर वाद है उतना किसी भी अन्य धर्म ग्रन्थों में नहीं है और वेद के एकेश्वर वाद का प्रभाव कुरान पर पड़ा है।

यह बात सुनकर महाराजा किशन प्रसाद से पं. रामचन्द्र देहलवी जी की ओर देखकर कहने लगे, क्या ऐसा वेदों में लिखा है? मुझे अब तक यह बात किसी ने नहीं बतलाई। पंडित जी आपकी इस नई जानकारी से मेरी आँखें खुल गयी है। मैं अब तक यही सोचता था कि हिन्दू धर्म में मूलतः अनेक देवी देवताओं का सिद्धान्त प्रचलित है। आपके इस दावे से मेरे भीतर जो शंका और द्विविधा अवस्था थी वह पूरी तरह से समाप्त हो गयी है। मैं आपसे कहना चाहता हूँ कि मेरे मन में जो हिन्दू धर्म छोड़ने के विचार उठ रहे थे उनको मैं निकाल देता हूँ। आर्य सज्जनो! बताइए एक रियासत का स्वामी यदि दूसरे मज़हब को स्वीकार लेता तो उस रियासत की हिन्दू जनता लाखों की तादाद में उसके पीछे न जाती।

वेदों में एकेश्वरवाद आया है। दूसरी बात कुरान में यह है कि अब तक 24 हज़ार नबी पैदा हुए हैं और उन सभी का सम्मान करने की बात कुरान में लिखी हुई है। चौबीस हज़ार नबी अब तक पैदा हुए हैं तो उनमें राम हैं, कृष्ण हैं, विष्णु हैं भगवान शंकर हैं तो हमें सभी का आदर करना चाहिए। मैंने ज़ोर देकर कहा कि क्या कुरान में, चौबीस हजार नबी हुए हैं कि नहीं? तब सभी ने कहा कि हाँ यह बात तो कुरान में आयी है। तब मैंने कहा कि तब हमारा भी फर्ज़ बनता है कि हम सभी का सम्मान करें उनकी कद्र करें। यह बात मैंने उस स्टेज पर कही।

हमारे आर्य समाज के शास्त्रार्थ महारथियों एवं विद्वानों ने ये बातें केवल अपने ही कार्यक्रमों में नहीं कही बल्कि अन्य मज़हबों के कार्यक्रमों में जाकर कहीं चाहे वह इस्लाम हो या ईसाईयत हो, सभी को सच्चाई से रूबरू करने का कार्य आर्य समाज के विद्वानों ने किया है। इसलिए आर्यसमाज सिर्फ हिन्दू धर्म का ही पथ प्रदर्शक नहीं रहा है अपितु समग्र मजहबों का भी मार्गदर्शक रहा है।

मो. 9922255597

☞ पृष्ठ 02 का शेष

प्रभु दर्शन

सहस्त्रों देशवासी इस राह पर चलते–चलते मौत की नींद सो गए, अपना सर्वस्व लुटा बैठे। यद्यपि हमारा यह संग्राम प्रायः अहिंसात्मक था, तथापि स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए हमें किसी देश से कम बलिदान नहीं देने पड़े। अन्तिम बलिदान तो महान् था, जिसका उदाहरण इतिहास में नहीं मिलता। गुलामी से छुटकारा पाने के लिए एक करोड़ 50 लाख लोग उजड़–उखड़ गए। हज़ारों आततायियों के हाथों मारे गए। माताओं और बहनों की लाज लुटी। जीवन भर की कमाई खत्म हो गई। परन्तु जब देश स्वतन्त्र हुआ तो देशवासी पहले से भी अधिक दुःखी हो गए। भारत का सौभाग्य है कि उसे इतने अच्छे नेता मिले। इन नेताओं की संसारभर में मान्यता है, परन्तु हमारा देश इतना दुःखी हो गया है कि वह इन नेताओं पर भी अविश्वास करने लगा है। हमारे नेता दिन–रात प्रयत्न कर रहे हैं कि दुःख और असन्तोष की मात्रा कम हो जाए, उजड़े–उखड़े लोग बस जायें, उपद्रव रुक जाएँ, अनाज की कमी दूर हो जाए, उलझनें सुलझा जायें, परन्तु व्यर्थ, सफलता की बजाय असफलता ही मिल रही है। इसका कारण यह है कि इन्होंने सुख के स्रोत प्रभु को भुला दिया है।

संसार में अनेकों विचारधाराएं सफलता प्राप्त करने की चेष्टा कर रही हैं। पूंजीवादी और वर्गवादी दोनों एक–दूसरे से पहले सफलता प्राप्त करना चाहते हैं। इस होड़ में वे अपना सब कुछ दाँव पर लगा रहे हैं। क्या उन्हें सफलता मिल रही है? नहीं। वे तो अपनी ही पैदा की हुई उलझनों में उलझकर रह गए हैं। उनकी दृष्टि तो केवल प्रकृति (भारतीय) की ओर है। आत्मा की ओर उनका ध्यान ही नहीं। केवल प्रकृति का पुजारी, संसार को सुखी नहीं कर सकता। अतः वे भी नहीं कर सके।

देश में अथवा विदेश में, इस समय जितने भी बड़े–बड़े आन्दोलन हैं, उनका ध्यान केवल शरीर की ओर है। आत्मा की उन्होंने सर्वथा अवहेलना की है। यही कारण है कि इतने पुरुषार्थ और परिश्रम के बाद भी संसार की नैया दुःख के सागर में डोल रही है। इस मौलिक तथ्य की ओर लगभग सभी उपनिषदों में अनेक स्थलों पर बार–बार संकेत किया गया है। बृदहारण्यकोपनिषद् 3.8.10 में याज्ञवल्क्य गार्गी से कहते है–

यो वा एतदक्षरं गार्ग्यविदित्वाऽस्मिल्लोके जुहोति, यजते, तपस्तप्यते बहूनि वर्षसहस्त्राण्यन्तदेवास्य तद् भवति। यो वा एतदक्षरं गार्ग्यविदित्वाऽस्माल्लोकात् प्रैति स कृपणोऽथ। य एतदक्षरं गार्गि! विदित्वाऽस्माल्लोकात् प्रैति स ब्राह्मणः।।

"हे गार्गि! जो इस अक्षर (अविनाशी पारब्रह्म परमात्मा) को जाने बिना इस लोक में होम करता, यज्ञ करता है (परोपकार में तत्पर होता है) वा तप तपता है (दुनिया के कल्याण या अपने लिए कष्ट सहन करता है), वह चाहे सहस्र वर्ष ऐसा करता रहे, पर वह सब कुछ अन्तवाला ही होता है। जो इस अक्षर (आत्मा) को जाने बिना हे गार्गि! इस दुनियां से चल देता है, वह कृपण (दया का पात्र) है। हाँ, जो इस अक्षर (आत्मा) को जानकर हे गार्गि! इस दुनिया से चलता है, वह सच्चा ब्राह्मण (विद्वान) है।

शुक्ल यजुर्वेद की काण्यशाखा की इसी उपनिषद् में आदेश दिया गया है–

"जो अपनी असली दुनिया (आत्मा) को देखे बिना इस दुनिया में चल देता है, तब वह दुनिया (आत्मा) इसको अपने भोग नहीं भुगाती। जैसे वेद बिना जाने वा और कोई कर्म बिना किये। (अपना फल नहीं भुगाता) और कि इस (आत्मा) को न जाननेवाला यदि बहुत बड़ा पुण्य कर्म भी करे, तो वह उसका अन्ततः हो जाता है। (नष्ट हो जाता) सो चाहिए कि आत्मा ही को अपना असली लोक समझकर उपासे। वह जो आत्मा को ही अपना लोक समझकर उपासता है, उसका कर्म (पुण्य, पुरुषार्थ, तप, यज्ञ, परोपकार, राजनीति अथवा धार्मिक कार्य) क्षीण नहीं होता, क्योंकि वह इसी आत्मा से जो–जो चाहता है रच लेता है।(1.4.14)

इसी प्रकार की बात छान्योग्योपनिषद् में प्रजापति ने कही है। श्वेताश्वतरोपनिषद् में इसी तथ्य को अत्यन्त सुन्दर और कवितामय ढंग से वर्णित किया गया है। कहा है–

यदा चर्मवदाकाशं वेष्टयिप्यन्ति मानवाः।
तदा देवमविज्ञाय दुःखस्यान्तो भविष्यति।।
6.2099

"जब लोग चमड़े की तरह आकाश को लपेट सकेंगे, तब परमात्मा को न जानकर भी दुःख का अन्त हो सकेगा।

जिस तरह यह असम्भव है कि आप आकाश को चटाई या चमड़े की तरह लपेट ले, उसी तरह यह भी असम्भव है कि प्रभु–दर्शन के बिना दुःखो का अन्त हो जाये। परन्तु दुनिया आकाश को चटाई या चमड़े की तरह अपने के गिर्द लपेटने का प्रयत्न कर रही है। आत्मा का भुलाकर अनात्मक वस्तुओं के पीछे भाग रही है। अविद्या ने मानव को अन्धा कर रखा है। भ्रमजाल इतना गहरा है कि उसमें सुविचार और सुपथ उलझकर रह गए है।

क्रमशः

पारिवारिक कल्याणार्थ यज्ञ

पण्डित वेदप्रकाश शास्त्री

आर्य परिवारों में विभिन्न उद्देश्यों से यज्ञ किया जाते हैं। इस लेख के माध्यम से कुछ ऐसे मंत्र संकलित करके प्रस्तुत किए जा रहे है। जिनके द्वारा आहुतियाँ देकर परिवारिक कल्याण हेतु किया जा रहा यज्ञ सम्पन्न किया जा सकता है।

1. **स्वस्तितं मे सुप्रातः सुसायं सुदिवं सुमृगं सुशकुनं मे अस्तु। सुहवमग्ने स्वस्त्य मर्त्यं गत्वा पुनरायाभिनन्दन् ॥**

अथर्व. 19.8.3

हे परमात्मन् देव! मेरे लिए प्रभातबेला सुन्दर हो, सांयकाल सुन्दर हो, दिन सुखद हो। पशुओं का विचरण करता हुआ समूह एवं कलरव करता हुआ सुन्दर पक्षियों का झुँड मेरे लिए अत्यन्त आह्लादकारी हो। हे अग्ने! स्वप्रकाश, ज्ञानस्वरूप, प्रभो! सुन्दर लेन देन अर्थात् ग्राह्य वस्तु जीवन में सुख–शान्तिदायक हो। हे परमेश्वर! अविनश्वर अर्थात् अमृतमय आनन्द को प्राप्त करवा कर सबको प्रसन्न एवं आनन्दित करते हुए पुनः प्राप्त हो।

2. **योगं प्र पद्ये क्षेमं च प्र पद्ये क्षेमं प्र पद्ये योगं च नमोऽ होरात्राभ्यामस्तु॥**

अथर्व 19.8.2

हे परमपिता परमेश्वर! अलभ्य वस्तु की प्राप्ति और उस प्राप्त वस्तु की सुरक्षा की स्थिति प्राप्त करूँ। प्राप्त वस्तु की सुरक्षा करते हुए नवीन पदार्थ प्राप्त करूँ। दिन और रात्रि दोनों से मैं अन्न एवं आदर–सम्मान प्राप्त करूँ। दोनों से मेरी प्रशंसा हो। ये दोनों ही मेरे अनुकूल हों। अतः आपको अनेकशः नमस्कार हो।

3. **उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवान् यज्ञेन बोधय। आयुः प्राणं प्रजां पशून् कीर्तिं यज्ञमानं च वर्धय॥**

अथर्व. 19.63.1

हे ब्रह्मन् वेद के रक्षक विद्वान् पुरुष। आप उठें और अन्य विद्वानों को भी यज्ञ अर्थात् श्रेष्ठ व्यवहार से जगाएँ, प्रबुद्ध बनाएँ और श्रेष्ठ कर्म करने वाले यज्ञमान की आयु, प्राण=आत्मबल, प्रजा–सन्तान, गो आदि पशु एवं कीर्ति को बढ़ाएँ।

4. **ब्रह्म होता ब्रह्म यज्ञा ब्रह्मणा स्वरवो मिताः। अध्वर्युर् ब्रह्मणो जातो ब्रह्मणोऽन्तर्हितं हविः॥**

अथर्व. 19.42.1

ब्रह्म=वेद द्वारा होता अर्थात् यज्ञकर्ता, ब्रह्म=वेद एवं ब्रह्म के द्वारा यज्ञाः=यज्ञ होते हैं। ब्रह्मणां=वेद के द्वारा यज्ञ स्तम्भ खड़े किए जाते हैं। ब्रह्मणः=वेद से अध्वर्यु अर्थात् यज्ञकर्ता प्रसिद्ध होता है। वेद के अन्दर विद्यमान हवि=हवन विधान है।

भावार्थ– वस्तुतः वेद द्वारा ही याजक, यज्ञ व्यवहार और यज्ञ विधान निश्चित होते हैं।

महर्षि दयानन्द ने ऋत्विज् की स्थिति अर्थात् संख्या स्पष्ट करते हुए संस्कार विधि में लिखा है–जो एक हो तो उसका नाम पुरोहित, दो हों तो ऋत्विक्, पुरोहित, तीन हों तो ऋत्विक पुरोहित और अध्यक्ष, और जो चार हों तो होता, अध्वर्यु, उद्‌गाता और ब्रह्मा।

वर्तमान समय में एक होने पर भी पुरोहित के स्थान पर उसे ही 'ब्रह्मा' के नाम से ही सम्बोधित किया जाता है।

5. **ब्रह्म सुचो घृतवतीर्ब्रह्मणा वेदिरुद्धिता। ब्रह्म यज्ञस्य तत्त्वं च ऋत्विजो ये हविष्कृतः। शमिताय॥**

अथर्व 19.42.2

ब्रह्म=ब्रह्मणा=वेद द्वारा घी वाली सुन्नाएं= स्रुवा–चमचे, और वेद द्वारा ही वेदी स्थिर अर्थात् निर्धारित की गई है। वेद के द्वारा यज्ञ का तत्त्व और जो हवन करने वाले ऋत्विज् भी स्थिर किए हैं। शान्ति के लिए यह सुन्दर आहुति वेदवाणी द्वारा समर्पित है। हमारा यह कथन सत्य हो।

भावार्थ– वेद से ही यज्ञ के साधनों, यज्ञकर्ताओं और विधियों का विधान किया जाता है।

6. **अर्चत प्रार्चत प्रियमेधासो अर्चत। अर्चन्तु पुत्रका उत पुरं न घृष्ण्वर्चत॥**

अथर्व. 20.92.5

हे प्रिय हितकारिणी मेधाबुद्धि वाले मनुष्यों। दुर्गम्य पुर में प्राप्य परमेश्वर की निर्भय होकर पूजा–अर्चना अर्थात् स्तुति करो। विशेषतः विस्तृत चिन्तन–मनन के साथ प्रार्थना–उपासना करो। ग्रहण करने योग्य योगाभ्यास और अति प्रेम से विशेष भक्ति करो। आत्मा और अन्तःकरण से भक्ति विशेष करो। गुणी सन्तानें भी उस ईश्वर की ही स्तुति–प्रार्थना–उपासना–जप आदि भक्तिपूर्वक करें।

भावार्थ– मनुष्यों को चाहिए कि अपने पुत्र–पुत्रियों सहित प्रत्येक क्षण में, प्रत्येक पदार्थ में, प्रत्येक कर्म परमात्मा की शक्ति को निहार आत्मा की उन्नति करें।

7. **जिह्वाया अग्रे मधु मे जिह्वामूले मधूलकम्। ममेदह क्रतावसो मम चित्तमुपायसि॥**

अथर्व. 1.34.2

मेरी जिह्वा के अग्रभाग पर माधुर्य रस हो, जिह्वा के मूल में भी मधुवत् माधुर्य हो। मेरी बुद्धि और कर्म में भी तू अवश्य विराजमान हो। मेरे चित्त में भी तू सदा विराजे।

8. **मधुमन्मे निक्रमणं मधुमन्मे परायणम् वाचा वदामि मधुमद् भूयासं मधुसंदृशः॥**

अथर्व. 1.34.3

हे परमात्मन्। आपकी कृपा से निश्चय ही मेरा निकट जाना अर्थात् प्रवृत्ति की ओर अग्रसर होना–प्रेय पथ की ओर प्रवृत्त होना, सांसारिक पदार्थों की ओर आकर्षित होना भी मर्यादित और माधुर्य से परिपूर्ण हो अर्थात् हमारे व्यवहार में अन्यों के प्रति किसी प्रकार का तिरस्कार, व्यंग्य, उत्तेजना, गर्वोक्ति, कटुवचन का भाव न प्रतीत हो। मेरा बाहर जाना–निवृत्ति की ओर अग्रसर होना– श्रेयपथ पर चलना–निष्काम भाव से कार्य में प्रवृत्त होने अथवा सांसारिक पदार्थों का उपभोग करते हुए भी उनमें लिप्त न होना भी हमारे लिए माधुर्य एवं सह्रदयतापूर्ण हो। वाणी से मैं ज्ञानपूर्ण, माधुर्ययुक्त वचन बोलूँ और मैं सदैव माधुर्य, विनम्रता, विनयशीलता सदृश गुणों से परिपूर्ण रहूँ।

भावार्थ– मेरा आना–जाना, पास और दूर होना, मेरी प्रवृत्ति और निवृत्ति ये सब लौकिक और पारलौकिक आचरित कार्य माधुर्यमय और प्रेमपूर्ण हों। जहाँ मेरी निक्रमण–निकट गमन की क्रिया मधुमय हो, वहाँ मेरी प्रत्येक परायण–परे हटने की क्रिया विरक्त होने की भावना भी माधुर्यपूर्ण हो। हम सभी आवागमन, निरीक्षण–परीक्षण, अभ्यास आदि समस्त चेष्टाओं, मनसा–वाचा–कर्मणा शुभगुणों के ग्रहण और उपदेश में माधुर्य रस का संचार करें।

9. **आत्मानं पितरं पुत्रं पौत्रं पितामहम्। जायां जनित्रीं मातरं ये प्रियास्तानुप ह्वये॥**

अथर्व. 9.5.30

आत्मीयजनों को, पिता को, पुत्र को, पौत्र को, दादा को, पत्नी को, जन्मदात्री माता को और जो प्रियजन हैं, उन सभी को मैं आदर से बुलाता हूँ अर्थात् परिवार के सभी सदस्य परस्पर के साथ एवं प्रियजनों के साथ सम्मानपूर्वक वार्तालाप तथा सद्व्यवहार करें।

10. **पूर्णत् पूर्णमुदचति पूर्णं पूर्णेन सिच्यते। उतो तदद्य विद्याम यतस्तत् परिषिच्यते॥**

अथर्व. 10.8.29

पूर्ण ब्रह्म से सम्पूर्ण जगत् उदय अर्थात् उत्पन्न होता है। पूर्ण ब्रह्म से सम्पूर्ण जगत् सींचा जाता है। और भी उस कारण को आज हम सब जानें, जिस कारण से वह सम्पूर्ण जगत् प्रकार से सींचा जाता है।

भावार्थ– यह सम्पूर्ण जगत् उस परम पिता परमेश्वर से उत्पन्न होकर वृद्धि हो प्राप्त होता है और अन्त में लय हो जाता है। इसलिए ईश्वर को कर्ता–धर्ता–संहर्ता कहते हैं। अतः वही परमात्मा स्तुति–प्रार्थना–उपासना के योग्य है, अन्य नहीं।

11. **तुभ्यं वातः पवतां मातरिश्वा तुभ्यं वर्षन्त्वमृतान्यापः। सूर्यस्ते तन्वे शं तपति त्वां मृत्युर्दयतां मा प्र मेष्ठाः॥**

अथर्व. 8.1.5

तेरे लिए अन्तरिक्ष में चलने वाला वायु शुद्ध रूप में बहे। तेरे लिए जलधाराएँ अमृतपूर्ण वर्षा करें। सूर्य तेरे शरीर के लिए शान्तिपूर्वक तपे। मृत्यु तुझ पर दया करे। तू किसी प्रकार दुःखी मत हो अर्थात् दुःख आ जाने पर भी सोच सकारात्मक बनी रहे।

4–E, कैलाश नगर, फाजिलका, पंजाब
मो. 9463428299

☞ *पृष्ठ 03 का शेष*

मांस–भक्षण और ...

"मांसाहारिणः कुतो दया।" जब ईसाइयों का ईश्वर मांसाहारी है तो उसको दया करने से क्या काम है? (समु. 13, पृ. 653)

(27) जब ईसाइयों का खुदा भी बैलों का बलिदान ले तो उसके भक्त गाय के बलिदान की प्रसादी से पेट क्यों न भरें और जगत् की हानि क्यों न करें? ऐसी–ऐसी बुरी बातें बाइबिल में भरी हैं और इसी के कुसंस्कारों से वेदों में भी ऐसा झूठा दोष लगाना चाहते हैं। परन्तु वेदों में ऐसी बातों का नाम भी नहीं। (समु. 13, पृ. 656)

(28) तनिक विचारिए कि बैल को परमेश्वर के आगे उसके भक्त मारें और वह मरवावे और लोहू को चारों ओर छिड़कें, अग्नि में होम करें, ईश्वर सुगन्ध लें, भला यह कसाई के घर से कुछ कमती लीला है? (समु. 13, पृ 658)

(29) भला कपोत के बच्चे का गला मरोड़ने से वह बहुत देर तक तड़पता होगा, तब भी ईसाइयों को दया नहीं आती। दया क्योंकर आए? इनके ईश्वर का उपदेश ही हिंसा करने का है। (समु. 13, पृ. 660)

(30) भला कोई मनुष्य एक लड़के को मरवावे और दूसरे लड़के को उसका मांस खिलावे ऐसा कभी हो सकता है? वैसे ही ईश्वर के सब मनुष्य और पशु, पक्षी आदि सब जीव पुत्रवत् हैं। परमेश्वर ऐसा काम कभी नहीं कर सकता। (समु. 13, पृ. 660)

(31) कसाई आदि मुसलमान, गाय आदि के गले काटने में भी –'बिस्मिल्लाह' इस वचन को पढ़ते हैं। जो यही इसका पूर्वोक्त अर्थ है तो बुराइयों का आरम्भ भी परमेश्वर के नाम पर मुसलमान करते हैं। (समु. 14, पृ. 704)

(32) जिस वस्तु से अधिक उपकार हो उन गाय आदि के मारने का निषेध न करना जानो हत्या कराकर खुदा जगत् का हानिकारक है। हिंसारूप पाप से कलंकित भी हो जाता है। (समु. 14, पृ. 721)

'ज्ञान गंगा सागर' से साभार

वैदिक अर्थ मन्त्रणा

● देव नारायण भारद्वाज

वैदिक संस्कृति के चार पुरुषार्थ–धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की परम प्रेणाओं में मानव जीवन के चार आश्रमों–ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ संन्यास की संजीवनी विद्युत् का प्रवाह गतिशील रहता है। आज के युग में यह शब्दावली आध्यात्मिक समझकर उपेक्षित कर दी जाती है, जबकि यह नितान्त व्यावहारिक संदेश को अपने में समेटे है। विद्यार्थी धैर्यपूर्वक विद्या (ज्ञान–विज्ञान) का अध्ययन करें, और गृहस्थ में आकर धर्मपूर्वक अर्थ का भर्जन करें। धर्म एवं अर्थ से समन्वित अपनी शुभकामनाओं को सफलीभूत करते हुए परिवार से ऊपर उठें और असहायों की सहायता करते हुए स्वेच्छापूर्वक सभी कुछ परिवार–समाज–राष्ट्र को समर्पित कर दें, और अपनी शारीरिक दशा के अनुसार जग एवं जगन्नाथ से संगतीकरण करें। वेद में इन पुरुषार्थों एवं आश्रमों का यत्र–तत्र विस्तारपूर्वक वर्णन हुआ है। पुरुषार्थ एवं आश्रम में विचित्र अर्थसाम्य दिखाई देता है–यथा सभी ओर से परिश्रमपूर्वक पुरुष होने का अर्थ। शास्त्रों का कथन है कि पशु–पादम्–कीट–पंतग की लाखों योनियों का लक्ष्य होता है–मनुष्य की योनि को प्राप्त करना, अर्थात् निपट भोग योनि को पार करके भोग व कर्म योनि–मानव तन को लब्ध करना। मानव योनि का लक्ष्य होता है–मोक्षानन्द को सुलभ करना। इसी को निःश्रेयस भी कहते हैं। निःश्रेयस की सुलभता अम्युदय पर निर्भर है। तात्पर्य यह है कि धर्म–अर्थ–काम का उत्तम रीति से विकास करना। वही अभ्युदय है। इस अभ्युदय के बिना निःश्रेयस संभव नहीं है।

अर्थ–कामनाओं को अनर्थ से बचाएँ तथा धर्म–धारणाओं में समर्थ बनाएँ–यही वेद का दृष्टिकोण है। महामात्य चाणक्य ने जहाँ एक ओर अर्थ को धर्म का मूल बताया है, वहीं दूसरी ओर सभी सांसारिक कामनाओं की पूर्ति में अर्थ की वांछनीयता हर व्यक्ति दिन–रात अनुभव करता है।

वयं स्याम पतयो रयीणाम्

(ऋ. 10.12.10)

'हम धनैश्वर्यों के स्वामी बनें'–जैसी प्रार्थनाओं से वेद का मन्तव्य स्पष्ट होता है।

वर्तमान में दृष्टिपात करते हैं तो हमें धनवान् तो बहुत मिलते हैं, किन्तु धनपति बहुत कम होते हैं। जो धनवान् होते हैं, वे या तो धन के सेवक होते हैं या शत्रु। कोई तो उसे बैंक–व्यापार या शेयर बाजार में लगाता है, उसकी गणना–देखभाल में लगा रहता है। अपने परिवार के साथ व्यतीत करने के लिए उसे समय ही नहीं मिलता। वही तो धन का सेवक है। दूसरा व्यक्ति धन कमाता–चुराता या लूट कर लाता है और दुर्व्यसन, भोग–विलास में नष्ट करता है–स्वयं भी नष्ट हो जाता है। ऐसे व्यक्तियों को वेद अकर्मादस्युः (ऋ. 10.22.8) अकर्मण्य दस्यु या शत्रु कहता है। धन के सेवक–शत्रु न बनकर स्वामी बनने के लिए वेद का प्रोत्साहन दृष्टव्य है।

शत हस्त समाहर सहस्त्रहस्त सं किर।
कृतस्य कार्यस्य चेह स्फातिं समावह।।

(अथर्व. 3.24.5)

अर्थात् मनुष्य सौ–सौ (सत्कार्यों) हाथों से कमाए और हज़ार–हज़ार हाथों से बाँटे। इस प्रकार अपने किए हुए व किए जाने वाले कार्यों की फसल को उचित रूप से बढ़ाता रहे।

दो हाथों वाला मनुष्य इतना विवेक वैभवशाली हो कि अपने साथ पचास–सौ व्यक्तियों को काम में लगाए और उत्तम उत्पादन से धन कमाएँ। उनको उनका उचित अंश प्रदान करे। उन सभी के परिवार स्वयं सन्तुष्ट होकर पात्रों की सहायतार्थ दान करें। तभी सौ हाथों की कमाई हज़ार हाथों से वितरित की जाएगी।

हिरण्यहस्तो वसु नो रराणः (अथर्व. 7.115.2)

तेजस्वी चमकते हाथ से हमें रमणीय ऐश्वर्य प्राप्त हो। इसी मन्त्र में कहा है कि दुराचार से सनी हुई लक्ष्मी मुझसे प्रभु दूर हटा दें, क्योंकि वह कुलक्ष्मी वन्दना बेल जैसे लिपटकर वृक्ष को सुखा देती है, वैसे ही वह मेरा पतन करने वाली है।

एता एना व्याकरं खिलेगा विष्ठिता इव।
रमन्तां पुण्या लक्ष्मीर्याः पापीस्ता अनीनशम्।।

(अथर्व. 7.115.4)

अर्थात् अपने घर या जीवन में आई हुई, सैकड़ों प्रकार की लक्ष्मियों का मैं विवेकपूर्वक पृथक्करण करता हूँ, जैसा कि ब्रजभूमि में आई विविध प्रकार की गौओं को गोपाल किया करता है। जो पुण्य कमाई की लक्ष्मी है, वही मेरे यहाँ रमण करे–पाप से प्राप्त लक्ष्मी को मैं नष्ट किए देता हूँ। यही हुई धनैश्वर्यों के स्वामी बनने की बात। धन की तीन गतियाँ शास्त्रों में बताई गई हैं, किन्तु व्यवहार में एक गति आज–कल अधिक प्रबल हो गई है, जिसे मिलाकर अब चार गतियाँ हो गई हैं–दान–भोग–निवेश–नाश। इन्हें हम उत्तम, मध्यम, अधम तथा निःकृष्ट गति का नाम दे सकते हैं। आधुनिक युग में निवेश पर बड़ा बल दिया जा रहा है–समाज के एक बड़े वर्ग की यही जीविका का साधन बन गया है। निवेश के ब्याज पर जीवनयापन अधमकोटि का है–पर आज इसे प्रतिष्ठा मिली हुई है। इन चार गतियों को हम चार अन्य प्रकार से चिन्हित कर सकते हैं। समर्थ, अर्थ, अनर्थ और व्यर्थ। अपनी कमाई में से हमने जनकल्याण के सत्कार्यों में दान कर दिया–वही हमें समर्थ बनाता है–जिस अपने भोग में लगा लिया वह अर्थ का अर्थ ही रहा, जितना भाग कहीं निवेश कर दिया वह अनर्थ (अन+अर्थ) वह हमारे लिए काम का है भी और नहीं भी। जहाँ जमा किया–वहाँ गोलमाल हो जाये–स्रोत पर कट जाए–बन्धित अवधि में हम ही न रहें, उत्तराधिकारी दौड़भाग कर प्राप्त करने के जंजाल में फँसें। चौथा प्रकार वह है जो व्यर्थ या नाश को प्राप्त हो जाए। चोरी, ठगी, डकैती, आकस्मिक क्षति के अतिरिक्त व्यभिचार, दुर्व्यसन, दुराचार, असंयत भोग–वासना में लुटाई गई सम्पदा नाश की कोटि में ही आती है। इन सभी गतियों की अपेक्षा वेद धन को गतिशील बनाए रखने की बात कहता है–

ये नदीनां संस्रवन्त्यु उत्सासः सदमक्षिताः।
तेभिर्मे सर्वैः संस्रावैः धनं संस्रावयामसि।।

(अथर्व. 1.15.3)

ये जो सदा चलते रहने वाले कभी न बन्द होने वाले नदियों के स्रोत निरन्तर बहते रहते हैं, उन्हीं अपने सब प्रवाहों के साथ मैं अपने धन को लगातार प्रवाहित करता जाता हूँ। ठहर जाने वाला जल दूषित हो जाता और प्रवाहित जल सदैव तरोताजा एवं शुद्ध रहता है। इसी प्रकार प्रवाहमान धन बढ़ता तो रहता ही है–लाभप्रद भी बना रहता है। अँग्रेज़ी में इसे 'करेंसी' अर्थात् धारा की भाँति बहने वाली कहते हैं और हिन्दी में मुद्रा कहते हैं, क्योंकि निर्धारित मूल्य इस पर अंकित अथवा मुद्रित रहता है, साथ ही मुद्रा या मुद्रिका की भाँति गोलाकार चक्र की भाँति यह धनराशियाँ भ्रमणशील रहती हैं। इस मन्त्र में आदान–प्रदान का सुन्दर निःदर्शन है। नदी भूमि का सिंचन व प्राणियों की प्यास बुझाते हुए अपना जल सागर को, सागर सूरज की किरणों को, किरणें–मेघों को, मेघ वर्षा को भूमि व पर्वतों पर बरसाते हुए बर्फ जमा देते हैं। यही बर्फ नदियों में पिघलकर रस–पोषण का क्रमिक चक्र चलता रहता है। मुद्रा–करेंसी धन का ऐसा ही पोषणकारी चंक्रमण होना चाहिए। नदियों में आई अमर्यादित बाढ़ जैसे उनके तटों को तोड़कर धारा को विस्थापित कर देती है, वैसे ही भ्रष्ट धन जितना बढ़ता है–भ्रष्टाचारी भी उतना ही शीघ्र नष्ट–भ्रष्ट हो जाता है। देखिए वेद की ऊह अथवा अभिलाषाः

असद भूम्याः सम्भवतद् द्यामेति महद् व्यचः।
तद्वै ततौ विधूपायत प्रत्यक् कत्तरिमृच्छतु।।

(अथर्व. 4.19.6)

पाप–अधर्म भूमि से उत्पन्न होता है और वह बड़े भारी रूप में ऊँचे आकाश में फैलकर द्योलोक तक चढ़ जाता है, किन्तु कर्ता को सन्ताप देता हुआ उल्टा लौटकर उस कर्ता पर ही आ पड़ता है। आधुनिक काल में ऐसे अनेक व्यक्तियों को समाचार–पत्र नित्य प्रकाशित करते रहते हैं, जो अति साधरण जन असाधारण रूप में नीति–अनीति के बल पर शासन के उच्चतर सिंहासन पर पहुँच जाते हैं। इस ऊँचाई को बनाए रखने के लिए न जाने कितने और अनाचार, पापाचार, अत्याचार करते हैं। एक दिन उक्त मन्त्र का शाप अपना प्रभाव दिखाता है। राज–प्रासाद में रहने वाले वे व्यक्ति एक दिन सिंहासन से उतारकर सीधे कारावास में पहुँचा दिए जाते हैं। इनमें तथाकथित धर्मचेता, न्याय नियन्ता, शिक्षा–विक्रेता, प्रशासन–प्रवक्ता, व्यापारकर्ता व राजनेता कौन नहीं होता है! ऊँचे पद पर पहुँचने वाले व्यक्ति घोर घृणित धन्धे में लिप्त पाए जाते हैं। धन को प्राप्त करने हेतु वेद भी प्रोत्साहित करता है, किन्तु कहता है–

अग्ने नय सुपथा राये। (यजु. 40.16)

धनैश्वर्य कुपथ से नहीं सुपथ से प्राप्त हो।

धनाभिलाषा की पूर्ति में हमारा मार्गदर्शन श्रेष्ठ पुरुष करें। यथा–

येन धनेन प्रपणं चरामि धनेन देवा धनमिच्छमानः।
तस्मिन् म इन्द्रो रूचिमा दधातु प्रजापतिः सविता सोमो अग्निः।।

(अथर्व. 3.15.6)

अर्थात् मैं धन लगाकर पवित्र व्यापार के द्वारा धन को और बढ़ाना चाहता हूँ, इसमें मैं परमेश्वर के साथ–साथ समाज के सुयोग्य देव–पुरुषों का मार्गदर्शन भी चाहता हूँ–जिन्हें हम इन्द्र, प्रजापति, सविता, सोम, अग्नि के नाम से जानते हैं, जो हमें क्रमशः विद्युत–सा चमकदार ऐश्वर्य, राजा की भाँति सुरक्षा, सूर्य की भाँति प्रेरणा व सर्जनशक्ति, चन्द्र की भाँति शान्ति गुणवन्ता तथा अग्नि की भाँति अग्रता व गतिशीलता प्रदान करते हैं। जब हम पुरुषार्थ व प्रार्थनापूर्वक धन का अर्जन करेंगे, तो वह धन काला नहीं उजला बनकर आएगा। पीढ़ियाँ बढ़ते हुए इसे बढ़ाती रहेंगी। महोपदेशक सांसद आर्यनेता पण्डित शिवकुमार शास्त्री ने अपने ग्रन्थ 'श्रुति सौरभ' में वेद के आर्थिक दृष्टिकोण को स्पष्ट करते हुए एक मन्त्र उद्धृत किया है–

एन्द्र सानसिं रयिं सजित्वानं सदासहम्।
वर्षिष्ठमूतये भर।। (ऋ. 1.8.1)

हे ऐश्वर्यों के भण्डार प्रभो! हमें अपनी रक्षा–गति–प्रगति आदि के लिए बाँटकर उपभोग में आने वाले, विजेता बनाने वाले, सदा स्वावलम्बी व सहिष्णु बनाने वाले, बहुत वर्षों तक टिकने व बढ़ने वाले ऐश्वर्य को सब ओर से दीजिए। मन्त्रानुसार धन का उपयोग चार प्रकार की प्रतिबद्धताओं को ध्यान में रखकर करने से वह न केवल बढ़ता है, प्रत्युत रक्षित भी रहता है। धन को न्यायपूर्वक बाँटकर उपभोग करें, सतर्क विजेता बना रहे, निरालस सहनशील व स्वावलम्बी बना रहे, और धन बढ़ता व बढ़ाता रहे। धन का स्वामी पतन से बचकर उच्च से उच्चतर स्थान प्राप्त करता रहे।

द्रविणं ममन्यात् ऋतस्य पथा नमसा विवासेत्।

(ऋ. 10.31.2)

ऋजुता एवं सच्चाई के मार्ग पर चलकर धन को परिश्रम व निराभिमानता से कमाए। इसी मन्त्र में आगे कहा गया है—**श्रेयासं दक्षं मनसा, जगृभ्यात्।।**

अर्थात् उत्तम कल्याणकारी व्यवसाय को ही मनोयोगपूर्वक करे।

महाभारत कालीन राजनीतिक विद्रूपताओं में उलझे हुए नीतिकार महात्मा विदुर के अनुभव को जानिए—

धर्मेण राज्यं विन्देत धर्मेण परिपालयेत्।
धर्ममूलां श्रियं प्राप्य न जहाति न हीयते।।

(विदुरनीति 2.39)

राजा को चाहिए कि वह धार्मिक उपायों से राज्य को प्राप्त करे और धार्मिक साधनों से ही उसकी पूर्ण रूपेण रक्षा भी करें, क्योंकि धममूलक, राज्यलक्ष्मी को पाकर न वह राजा उस ऐश्वर्य को छोड़ता है और न वह ऐश्वर्य उस राजा को छोड़ता है। विदुरजी के समान नीतिज्ञ—मंत्री की बात को राजा धृतराष्ट्र नहीं अपना सके, क्योंकि वे प्रज्ञाचक्षु नहीं चक्षुहीन होकर अपने पुत्र दुर्योधन के मोहपाश में जकड़े थे। धर्मराज युधिष्ठिर की नैतिकता का आकलन कीजिए जो कुरुक्षेत्र की युद्धभूमि में भी अपने शस्त्रास्त्रों को एक ओर छोड़कर कौरवों के प्रथम सेनापति के रूप में युद्ध के लिए उद्यत पितामह भीष्म के समीप जाकर नतमस्तक होकर कहते हैं—हम अपने कर्त्तव्य—पालन की दृष्टि से युद्ध के लिए प्रस्तुत हो रहे हैं। आप हमारे पूज्य हैं—मैं आपकी अनुमति व आशीर्वाद के लिए आपकी सेवा में उपस्थित हुआ हूँ। धर्मराज के इस शिष्ट व विनीत व्यवहार से गदगद् भीष्म पितामह पुलकित होकर बोल पड़े—मैं तुम्हें आशीर्वाद देता हूँ, ईश्वर तुम्हें विजयी बनाए। साथ ही उन्होंने अपनी दुर्बलता—विवशता के शब्दों में अर्थ की महत्ता भी प्रकट कर दी।

अर्थस्य पुरुषों दासो दासस्त्वर्थो न कस्यचित्।
इति सत्यं महाराज! बद्धोऽस्म्यर्थेन कौरवैः।।

(महा. 6.41.36)

हे युधिष्ठिर! मनुष्य अर्थ का दास है। अर्थ किसी का दास नहीं। इसलिए तुम्हें ठीक समझते हुए भी मैं दुर्योधन के पक्ष लेकर लड़ रहा हूँ, क्योंकि मेरी सब आवश्यकताएँ पूरी करके कौरवों ने मुझे अर्थ से बाँध लिया है। अतः इस शरीर पर दुर्योधन का अधिकार है; किन्तु आत्मपक्ष तो न्याय की ओर है, इएलिए मैं तुम्हारी विजय की कामना करता हूँ। इसमें कोई सन्देह नहीं कि वे सत्य व न्याय के आशीर्वाद पाण्डवों को फले और वे विजयी हुए। पितामह भीष्ट की मात्र एक अर्थ की ही विवशता नहीं थी; किन्तु उनके शब्दों में आज के सामान्यजन की बाध्यता बोल रही थी यथा— **'बुभुक्षितः किन्न करोति पापम्'** भूखा कौन—सा पाप करने पर उतारू नहीं हो जाता? आधुनिक काल में तो इस भूख के एक नहीं सहस्रो मुख बन गए हैं, जो रोटी—कपड़ा—मकान हीं नहीं, अब कार, कुत्ता, कोठी की माँग को भी पीछे छोड़कर पद, मान, प्रतिष्ठा की लक्ष्मण रेखाओं को भी लांघकर वोट, नोट, चोट की सत्ता तक पहुँच गई है। उर्दू शायर ने सही संकेत किया है— **तंगदस्ती भी बुरी माल की कसरत भी बुरी।** बस इन्हीं बातों से ईमान बदल जाता है। हाथ की तंगी, दरिद्रता, धन—वैभव की अधिकता दोनों ही बुराई की जड़ है; जिनसे मनुष्य के चरित्र का पतन हो जाता है। हिन्दी कवि बिहारी जी ने भी यही कहा है—

कनक—कनक ते सौ गुनी मादकता अधिकाय।
या खाए बौराय जग वा पाये बौराय।।

धतूरा व स्वर्ण दोनों को ही कनक कहते हैं। धतूरा तो खाने पर ही मनुष्य को मदहोश करता है, जबकि स्वर्ण को पाते ही मनुष्य मदहोश हो जाता है। गेहूँ का नाम भी कनक है। जो मनुष्य भूखे होने पर दर—दर भटकते हैं, किन्तु पेट भर जाने पर वही इतराने लगते हैं—अर्थात् उन्हें रोटी लग गई है कि लोकोक्ति से पहचाना जाता है। भुक्तभोगी विरक्त सम्राट भर्तृहरि की अनुभूति सुनिए—

यस्यास्ति विन्तं स नरः कुलीनः, स पण्डितः
स श्रुतवान्गुणज्ञः।
स एवं वक्ता स च दर्शनीयः
सर्वेगुणाः काञ्चनमाश्रयन्ते।।

(नीतिशतक 41)

धन प्राप्त हो गया, तो मानो वह व्यक्ति कुलीन, पण्डित, गुणज्ञ, विद्वान, वक्ता और दर्शनीय हो गया, अर्थात् सभी गुण स्वर्ण में निवास करते हैं। राजर्षि भर्तृहरी की भले ही तत्कालीन जगत् के प्रति यह व्यंग्योक्ति हो, किन्तु आज यह वास्तविकता है। पति—पत्नी व दो बच्चों के छोटे परिवार में जहाँ स्त्री—पुरुष दोनों अच्छे कमाऊ होते हैं; वहाँ उनकी भोगलिप्सा असीमित हो जाती है। अनेक शयनकक्षों का विशाल आवास, प्रत्येक सदस्य का पृथक् वाहन, प्रचुर ए.सी., टी.वी., वी.सी.आर, सीडीपी, फ्रिज, इन्वर्टर और जनरेटर न जाने क्या नहीं चाहिए उन्हें। कोई विद्यार्थी या बीमार कितना ही पीड़ित हो, उनका जनरेटर तो उनकी सम्पन्नता का डंका पीटता ही रहेगा। इसीलिए वेद ने कहा है—

हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम्।

(यजु. 40.17)

सत्य के पात्र का मुख नमकदार सोने द्वारा ढका होने से मनुष्य सोने से आगे बढ़ ही नहीं पाता है।

हिरण्यपाणि (ऋ. 1.22.5)

बनकर मनुष्य स्वयं ही स्वर्ण के आवरण को हटाकर सत्य आनन्द के शाश्वत लक्ष्य को प्राप्त करे। आज सर्वत्र स्वर्ण के समान ज्योति व चमक दिखाई देती है। जहाँ देखो वहाँ इन्द्र ही इन्द्र अर्थात् विद्युत ही विद्युत का चमत्कार है। कौन—सा यंत्र—उपकरण है जो इस विद्युत से संचालित नहीं किया जाता है। जो काम कभी हाथ अथवा हाथ की अंगुलियाँ करतीं थीं, मानव मस्तिष्क करता था; वही काम अब सुपर कम्प्यूटर संकेत मात्र से कर देता है। भारत जैसे विकासशील देश विद्युत के अभाव से ग्रसित रहते हैं; कितना ही जनरेटर चलाओ यन्त्र—संयन्त्र ठप्प हो ही जाते हैं, तभी मनुष्य इन यन्त्रों की यन्त्रणा—यातना में फँस जाते हैं।

आज राष्ट्र के विकास का अर्थ है ऊपरी चमक—दमक को बढ़ाना। विज्ञान बहुत उपयोगी व आवश्यक है, किन्तु उसी सीमा तक जहाँ हमारा मौलिक ज्ञान भी रक्षित रहे। कहीं ऐसा न हो कि शरीर तो मोटा होता रहे, किन्तु आत्मा दुर्बल होती जाए। असौम्यता—कामुकता—हिंसा से भरे चलचित्र, विज्ञापन तथा महिलाओं के नग्न—फैशन प्रदर्शन बालकों की मानसिकता को कुप्रभावित करते चले जाते हैं। घर—बाहर सर्वत्र चरित्र का पतन चरम परिणति पर पहुँच चुका है। किसी युग का वह नेवला जिसका आधा शरीर सोने का था, महाभारत—कालीन युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ के बृहद भोज की जूठन में लोटता फिर रहा था। उस यज्ञ में सभागत ब्राह्मण—श्रेष्ठों ने उससे प्रश्न किया : अरे नेवले इधर—उधर जूठन में जहाँ अतिथियों के भोजनोपरान्त हाथ धोये जा रहे हैं—क्यों लोट लगाता फिर रहा है? उसने अपने पुराने युग की चर्चा करते हुए उत्तर दिया—तब एक निर्धन ब्राह्मण द्वारा अतिथि को खिलाए सत्तू की जूठन में मेरा आधा शरीर स्वर्ण का हो गया था। सोचा था कि शेष आधा शरीर इस महाभोज की जूठन में सोने का हो जाता, किन्तु मैं निराश ही रह गया हूँ। हे नेवले तू आज नहीं हुआ, नहीं तो तेरे स्वर्णभाग को लेने के लिए लोग तेरी हत्या ही कर देते। जहाँ लोग दुर्घटनाग्रस्त—असहाय, रोते—बिलखते—कराहते स्त्री—पुरुष—बच्चों के शरीर को नोचकर आभूषण खींच लेते हों, और हर अत्याचार कर अबोध बालकों का अपहरण करके प्रतिष्ठित होते हों, वहाँ कौन—सी यन्त्रणा सम्भव नहीं है!

इन यन्त्रणाओं से वैदिक मन्त्रणा ही हमें बचा सकती है। अन्याय—पापाचार से धन कमाने वाले यदि इतना ध्यान कर लें—

स चेत्ता देवता पदम् (ऋ. 1.22.5)

वही सर्वज्ञ सचेतक ईश्वर सभी का पूज्यतम देव है, हमारे सभी कार्यों को गुप्तरूप से देखनेवाला है, उसके स्वर्णकर कृपाण कर बनने में भी समर्थ हैं। बात बढ़ती न जाए, इसलिए उपसंहार स्वरूप वेदान्त के दो मन्त्रों का स्मरण मात्र कराते हुए वक्तव्य को विराम देना समीचीन समझता हूँ—

ईशा वास्यमिदँसर्व यत्किञ्च जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्य स्विद्धनम्।।

(यजु. 40.1)

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतम् समाः।
एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे।।

(यजु. 40.2)

अर्थात् जो व्यक्ति आस्तिक हैं। वे ईश्वर को सर्वत्र व्याप्त जानकर, उससे डरते हैं और समझते हैं कि वह सर्वत्र उन्हें देख रहा है। जो कुछ भी उन्हें मिला है, वह सभी उसी का दिया हुआ है। वे अन्याय—अत्याचार से किसी का कुछ भी द्रव्य ग्रहण करना नहीं चाहते हैं। वे त्यागपूर्वक भोग द्वारा इस लोक में अभ्युदय एवं परलोक में निःश्रेयसरूप आनन्द के अधिकारी होते हैं। ऐसे व्यक्ति कर्त्तव्य कर्म करते हुए ही सौ या न्यूनाधिक वर्षों तक जीने की इच्छा करते हैं। इन व्यक्तियों को अधर्मयुक्त अवैदिक कर्म भी लिपायमान नहीं करते हैं। विद्वान्—जन सम्पूर्ण गीता को इन्हीं दो मन्त्रों का मनोरस व्याख्या ग्रन्थ मानते हैं।

काङ्क्षन्तः कर्मणां सिद्धिं यजन्त इह देवताः।
क्षिप्रं हि मानुषे लोके सिद्धिर्भवति कर्मजा।।

(श्रीमद्भगवद्गीता 4.12)

न मां. कर्माणि लिम्पन्ति न मे कर्मफले स्पृहा।
इति मां योऽभिजानाति कर्मभिर्न स बध्यते।।

(श्रीमद्भगवद्गीता 4.14)

योगीराज कृष्ण ने इन श्लोकों में सार रूप में यही उपदिष्ट किया है कि मनुष्य, लोक में लोग देवताओं के प्रति पूजा की भावना से कर्मों की सिद्धि की कामना करते हैं, तो वह उन्हें शीघ्र प्राप्त हो जाती है, उन्हें कर्मों का लेप भी नहीं होता है; क्योंकि उन्हें कर्मफल में आसक्ति नहीं होने से वे कर्मों के बन्धन में नहीं पड़ते हैं। लेखक के एक सेवा—निवृत्त वरिष्ठ अभियन्ता मित्र की अन्तिम श्वास निकलते—निकलते योग्य युवा चिकित्सक ने बचा ली और उन्हें नवजीवन दे दिया। घर पर जब लेखक उन्हें देखने गया, तब विश्राम शैय्या से फोन पर उनकी बात चल रही थी। वे सुन कम, बोल अधिक रहे थे। बोले—कुर्सी खींचकर बैठ जाइए। अच्छी पेंशन के अतिरिक्त भी उनकी भरपूर नियमित आय है। पुत्र—वधू एवं पुत्र की मासिक आय स्रोतों का बखान तो उन्हीं के मुख से अच्छा लगता है। इतने पर भी किए गए शेयरों से सम्बन्धित वार्ता देर तक चलती रही, और मैं प्रतीक्षा करता रहा। जब यह बात प्रोफेसर ज्ञानेन्द्र वासिष्ठ को बताई गई; तो उन्होंने एक हास्य—प्रसंग ही सुना दिया। उन्होंने कहा कि एक धनवान सज्जन को सरसाम रोग हो गया। बहुत तेज ज्वर 106 डिग्री फा. तक पहुँच गया। डॉक्टर औषधि—उपचार एवं बर्फ लगाकर उनकी चिकित्सा करने में लगे थे। वे मूर्छित थे। जब 106° से उतरकर उनका 104° पर पहुँचा, तब सभी तीमारदार व डॉक्टर प्रसन्न होकर बोल पड़े, 104° हो गया है। इस बीच वे धनवान सज्जन भी होश में आ गए; और इस104° की संख्या को सुनकर सन्तुष्ट होकर चर्चा का स्पष्टीकरण किया। बोले अच्छा! शेयर का मूल्य बढ़कर 100° से 104° हो गया है। डॉक्टर ने स्थिति को स्पष्ट करते हुए— नहीं शेयर के मूल्य चढ़ने की बात नहीं है। आपका ज्वर 106 में 104 पर उतरने की बात है। यह सुनकर वे धनवान सज्जन फिर से बेहोश हो गए। यही तो अर्थ का अनर्थ है जिसे वेदानुसार समर्थ बनाया जा सकता है।

वरेण्यम, एम.आई.जी. प्लाट 45, फेज—प्रथम
अवन्तिका कॉलोनी, रामघाट रोड, अलीगढ़ (उ.प्र.)

अन्धविश्वासों को छोड़िए : वैज्ञानिक-तार्किक जीवनशैली अपनाइए

● डॉ. संजय तेवतिया

अन्धविश्वास एक ऐसा विश्वास है, जिसका कोई उचित कारण नहीं होता है। एक छोटा बच्चा अपने घर, परिवार एवं समाज में जिन परम्पराओं, मान्यताओं को बचपन से देखता एवं सुनता आ रहा होता है, वह भी उन्हीं का अक्षरशः पालन करने लगता है। यह अन्धविश्वास उसके मन–मस्तिष्क में इतना गहरा असर छोड़ देता है कि जीवनभर वह इन अन्धविश्वासों से बाहर नहीं आ पाता। अन्धविश्वास अधिकतर कमज़ोर व्यक्तित्व, कमजोर मनोविज्ञान एवं कमज़ोर मानसिकता के लोगों में देखने को मिलता है। जीवन में असफल रहे लोग अधिकतर अन्धविश्वास में विश्वास रखने लगते हैं एवं ऐसा मानते हैं कि इन अन्धविश्वासों को मानने एवं इन पर चलने से ही शायद वह सफल हो जाएँ। अन्धविश्वास न केवल अशिक्षित एवं निम्न आय वर्ग के लोगों में देखने को मिलता है, बल्कि यह काफी शिक्षित, विद्वान्, बौद्धिक, उच्च आय वर्ग एवं विकसित देशों के लोगों में भी कम या ज्यादा देखने को मिलता है। यह आमतौर पर पीढ़ी दर पीढ़ी देखने को मिलता है। अन्धविश्वास समाज, देश, क्षेत्र, जाति एवं धर्म के हिसाब से अलग–अलग तरह के होते हैं। विभिन्न प्रकार के अन्धविश्वास आमतौर पर समाज में देखने को मिलते हैं, जैसे आँख का फड़कना, घर से बाहर किसी काम से जाते समय किसी व्यक्ति द्वारा छींक देना, बिल्ली का रास्ता काट जाना, 13 तारीख को पड़ने वाला शुक्रवार या 13 नवम्बर को अशुभ मानना, हथेली पर खुजली होना, काली बिल्ली में भूत–प्रेत का वास होना, परीक्षा देने जाने से पहले सफेद वस्तु जैसे दही आदि का सेवन करना, सीधे हाथ पर नीलकंठ नामक चिड़िया का दिखाई देना, सीढ़ी के नीचे से निकलना, मुँह देखने वाले शीशे का टूटना, घोड़े की नाल का मिलना, घर के अन्दर छतरी खोलना, लकड़ी पर दो बार खटखटाना, कन्धे के पीछे नमक फेंकना, मासिक धर्म के दौरान महिला को अपवित्र मानकर उसके मन्दिर में प्रवेश को वर्जित करना, श्राद्ध के दिनों में नया काम शुरू न करना या नए कपड़े न सिलवाना आदि।

अन्धविश्वास सच्चाई और वास्तविकता से बहुत दूर होते हैं। अन्धविश्वास में व्यक्ति अलौकिक शक्तियों के अस्तित्त्व में विश्वास रखता है, जो प्रकृति के नियमों की पुष्टि नहीं करता है और न ही ब्रह्माण्ड की वैज्ञानिक समझ रखता है। अन्धविश्वास व्यापक फैला हुआ है। अलौकिक प्रभाव में तर्कहीन विश्वास होता है। आँख के फड़कने के बारे में लोगों में यह अन्धविश्वास है कि पुरुष की दाईं आँख एवं महिला की बायी आँख फड़कना शुभ होता है। वहीं इसका उल्टा होना अशुभ माना जाता है। चिकित्सा विज्ञान के अनुसार, इसे मसल फ्लीकरिंग कहते हैं, इसका कोई कारण अभी तक पता नहीं है एवं न ही इसका कोई उपचार है। आँख का फड़कना स्वतः ही बन्द हो जाता है। घर से बाहर किसी कार्य के लिए जाते समय, किसी दूसरे व्यक्ति द्वारा छींक देना भी एक अन्धविश्वास है। ऐसा होने पर व्यक्ति वहीं कुछ समय के लिए रुक जाता है एवं घर का पानी पीकर या कुछ छोटा, मोटा खाकर ही दोबारा निकलता है। बिल्ली का रास्ता काट जाना भी अशुभ माना जाता है। देखा गया है कि अगर बिल्ली किसी रास्ते को पार कर जाती है, तब दोनों तरह के लोग रुककर खड़े हो जाते हैं एवं तब तक खड़े रहते हैं, जब तक कि कोई व्यक्ति या कोई वाहन उस रास्ते को पार न कर जाए। इस कारण कई बार सड़कों पर जाम तक लग जाते हैं। ऐसा कहा जाता है कि बिल्ली, शेर के परिवार से संबंधित होती है। शेर, चीता एवं इस परिवार के जानवर जब कोई सड़क या रास्ता पार करते हैं, तब रास्ता पार करने के बाद रुककर, पीछे मुड़कर अपने शिकार की तरह देखते हैं। इसी कारण पुराने समय में लोग जब तक शेर चला नहीं जाता था, तब तक उस रास्ते पर आगे नहीं बढ़ते थे। कारण तो ये था, लेकिन अब यह अन्धविश्वास बन गया है। तेरह नंबर या तेरह तारीख को अशुभ माना जाता है एवं अगर तेरह तारीख, शुक्रवार के दिन पड़ती है, तो इसे अत्यन्त अशुभ माना जाता है। देखा गया है कि होटल्स में तेरह नंबर का कमरा या तेरहवाँ तल भी नहीं होता है, वहाँ पर बारह के बाद सीधे चौदहवाँ नंबर होता है। यह भी एक प्रकार का अन्धविश्वास है। हाथ की हथेली पर खुजली होना भी अन्धविश्वास से जुड़ा है, जिसके अनुसार पुरुष की दायीं हथेली पर एवं महिला की बांयी हथेली पर खुजली होने से धन की प्राप्ति होती है, जबकि इसका उल्टा होने पर आर्थिक हानि सम्भव है। हमारे समाज में ऐसा माना जाता है कि काली बिल्ली में भूत का वास होता है। इसी कारण से लोग काली बिल्ली को अपने घर में नहीं घुसने देते। वहीं समाज के कुछ हिस्सों में काली बिल्ली को भाग्यशाली भी माना जाता है। इस कारण से लोग काली बिल्ली को घरों में पाले हैं। लेकिन काली बिल्ली में न भूत का वास होता है और न ही काली बिल्ली अच्छे भाग्य का कारण होती है। यह मात्र एक अन्धविश्वास एवं कपोल कल्पित घटनाओं पर आधारित है। बच्चों के परीक्षा देने जाने से पहले माता–पिता सफेद वस्तु जैसे दही आदि खिलाकर भेजते हैं। यह इस अन्धविश्वास से जुड़ा होता है कि सफेद वस्तु खाकर जाने से परीक्षा बहुत अच्छी होती है एवं नंबर बहुत अच्छे आते हैं। अगर आप कहीं जा रहे हैं एवं रास्ते में नीलकंठ नामक चिड़िया बांयी हाथ की तरह दिखाई पड़ती है, तो यह अत्यन्त शुभ का घोतक है। इसके पीछे कहानी यह जुड़ी हुई है कि हम जो भी बात नीलकंठ नामक चिड़िया से कहेंगे, वह बात सीधे भगवान् शिव तक पहुँचा देगी एवं हमारी मनोकामना पूरी होगी। खड़ी हुई सीढ़ी के नीचे से निकलने को लोग दुर्भाग्य से जोड़ते हैं, जबकि यह केवल एक अन्धविश्वास मात्र ही है। मुँह देखने वाले शीशे का टूटना भी अशुभ माना जाता है एवं इसे घर में रखना भी अशुभ होता है। ऐसा अन्धविश्वास हमारे समाज में काफी प्रचलित है। घोड़े की नाल (घोड़े के पैरों के नीचे लगे होने) का मिलना शुभ माना जाता है एवं लोग इस नाल से गोल छल्ला बनवाकर दाएँ हाथ के बीच की उंगली में पहनते हैं। एक अन्धविश्वास के अनुसार, घर के अन्दर छाते को खोलना अशुभ माना जाता है। लकड़ी पर चाहे वह लकड़ी का दरवाज़ा हो या कोई अन्य वस्तु, दो बार खटखटाना भी शुभ नहीं माना जाता है। यह भी एक प्रकार का अन्धविश्वास ही है। जब कोई व्यक्ति अच्छे से तैयार होता है एवं किसी को वह बहुत अच्छा, सुन्दर लगता है, तब वह लकड़ी की किसी वस्तु को छूकर टचवुड बोलता है, ताकि उस व्यक्ति को नजर न लगे, जबकि इसमें अन्धविश्वास के अलावा कोई सच्चाई नहीं होती है। हमारे समाज में दुर्भाग्य को दूर करने के लिए व्यक्ति के कन्धे के पीछे लोग नमक भी फेंकते हैं, जिससे कि उस व्यक्ति का भाग्य जागृत हो जाए, यह कार्य भी अन्धविश्वास की श्रेणी में आता है। जब कोई व्यक्ति छींकता है, तब हम कहते हैं कि भगवान् भला करे या छत्रपति जय नंदी माई। हमारे पूर्वज बताते हैं कि ऐसा इसलिए कहा जाता है कि कहीं छींकने के समय पर शैतान हमारी आत्मा को न ले जाए। यह भी एक प्रकार का अन्धविश्वास ही है। हालांकि, आजकल ज्योतिष को विज्ञान ही कहते हैं, (गणित ज्योतिष विज्ञान है फलित ज्योतिष नहीं– सम्पादक) लेकिन अधिकतर ज्योतिषियों द्वारा बताई गई बात या की गई भविष्यवाणी झूठी ही निकलती है। भूत–प्रेत में विश्वास रखना एक बहुत बड़ा अन्धविश्वास है। आमतौर पर जो लोग भूत से मिलने या भूत के दिखने की बात करते हैं, वे सिर्फ कहानियाँ गढ़ते हैं या फिर किसी मानसिक रोग से पीड़ित होते हैं, जिससे अजीबोगरीब चीजें दिखने लगती है या अजीबोगरीब आवाज़ सुनाई देने लगती है, जबकि वास्तव में ऐसा नहीं होता। चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र में इसे 'हैलुसिनेशन' कहते हैं। मासिक धर्म के समय लड़कियों एवं महिलाओं का मंदिर में प्रवेश वर्जित एवं पूजा करना तथा भगवान् की मूर्ति के सामने दीपक, धूपबत्ती या अगरबत्ती जलाना मना होता है, क्योंकि यह माना जाता है कि मासिक धर्म के दौरान महिला अपवित्र हो जाती है, जबकि यह अन्धविश्वास के अलावा कुछ नहीं है, क्योंकि मासिक धर्म एक सामान्य शारीरिक प्रक्रिया है जैसे साँस लेना, दिल का धड़कना, भोजन करना, शौच जाना आदि। ऐसा कहा जाता है कि श्राद्ध के दिनों में नए काम की शुरुआत नहीं करते, नया सामान नहीं खरीदते हैं, नए कपड़े नहीं सिलवाते हैं। श्राद्ध के दिनों में हम अपने पितरों को याद करते हैं, उनकी पूजा करते हैं। हमारे परमपूज्य पितृगण हमें इन कार्यों को करने से नहीं रोकते हैं। अतः यह भी एक अन्धविश्वास है। हमारे समाज में बहुत सारे लोग मंगलवार के दिन बाल नहीं कटवाते हैं एवं न ही दाढ़ी बनाते या बनवाते हैं। मंगलवार को भगवान् हनुमान का दिन माना जाता है। भगवान् हनुमान के शरीर पर बाल अधिकता में पाए जाते हैं। इस कारण से लोग मंगलवार के दिन बाल कटवाने व दाढ़ी बनाने से बचते हैं, जबकि यह सही नहीं है। यह एक अन्धविश्वास मात्र ही है। अन्धविश्वास से बचने के लिए आवश्यकता है अपने मन, मस्तिष्क, सोच एवं मनोविज्ञान को मजबूत करने की। अक्सर लोग, अन्धविश्वासी, सुनी–सुनाई बातों के आधार पर होते हैं। कभी बिल्ली के रास्ता काटने पर उस रास्ते से बाहर जाकर देखिए, आप पर किसी तरह का कोई बुरा प्रभाव नहीं पड़ेगा। इसी प्रकार अन्य अन्धविश्वासों पर भी प्रयोग करके देखिए, आप अपने आप इन अन्धविश्वासों से बाहर निकल आएँगे। अगर आपके साथ इन अन्धविश्वासों पर प्रयोग करते समय कोई अनहोनी होती है, तो यह महज एक संयोग ही होगा। इसमें कोई सच्चाई नहीं होगी। अगर कोई आपसे कहता है कि इन अन्धविश्वासों में सच्चाई है, तब आप उससे कहिए कि वह इन अन्धविश्वासों की सच्चाई को साबित करके दिखाए। अपने अन्धविश्वास से सम्बन्धित विश्वास को छुड़ाना बहुत मुश्किल होता है, यह एक कड़वी सच्चाई है। अन्धविश्वास से बचने के लिए हमेशा सकारात्मक बने रहें। मानव मस्तिष्क, विश्वास एवं घटना के बीच बहुत जल्दी सम्बन्ध बना लेता है। अगर कोई व्यक्ति तेरह तारीख के दिन शुक्रवार को खतरनाक मानता है एवं उसी दिन उसके साथ कोई अनहोनी हो जाती है, तब अन्धविश्वास मजबूती के साथ और प्रबल हो जाता है। ऐसा ही अन्य अन्धविश्वासों के साथ भी होता है, जबकि यह मात्र एक संयोग ही है।

वैदिक पथ से साभार

मूर्तिपूजा–खण्डन से उत्तेजित होने की आवश्यकता नहीं

● भावेश मेरजा

सत्यार्थ प्रकाश के 11 वें समुल्लास में आर्यसमाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने मूर्तिपूजा–समर्थक लोगों के समक्ष एक सीधी बात प्रस्तुत की है, जो निम्नलिखित है–

"आवाहन, प्राणप्रतिष्ठादि पाषाणादि मूर्ति–विषयक वेदों में एक मन्त्र भी नहीं। वैसे **'स्नानं समर्पयामि'** इत्यादि वचन भी नहीं है। अर्थात् इतना भी नहीं है कि **'पाषाणादिमूर्तिं रचयित्वा मन्दिरेषु संस्थाप्य गन्धादिभिरर्चयेत्'** अर्थात् पाषाण की मूर्ति बना, मन्दिरों में स्थापन कर, चन्दन अक्षतादि से पूंजे। ऐसा लेशमात्र भी नहीं।"

अब उन मित्रों को जो ऐसा समझ रहे हैं कि बिना मूर्तिपूजा का तो हिन्दू धर्म हो ही नहीं सकता, अकल्पनीय है, उनको हमारा नम्र निवेदन है कि आप लोग वेदों में से अधिक नहीं तो कम से कम 2–3 ऐसे मन्त्र कि जिनमें मूर्तिपूजा का स्पष्ट शब्दों में प्रतिपादन किया गया हो, ऐसे मन्त्र निकालकर प्रस्तुत कीजिए कि जिससे महर्षि दयानन्द जी की उक्त बात मिथ्या सिद्ध की जा सके।

ऋग्वेदादि चार वेदों में बीस सहस्र से भी अधिक मन्त्र हैं। अगर आपको वेदों में ऐसे 2–3 मन्त्र नहीं मिलते तो आप 10–11 प्रमुख उपनिषदों में से मूर्तिपूजा समर्थक ऐसे 2–3 वाक्य या 2–3 सूत्र दर्शन शास्त्रों के भी प्रस्तुत कर सकते हैं।

क्या आपसे इतना भी नहीं हो सकता कि वेदमंत्रों के या उपनिषद् वाक्यों या दर्शन–सूत्रों के माध्यम से स्वामी दयानन्द जी की उपर्युक्त बात का खण्डन किया जा सके? अन्यथा आपको उनकी सत्य बात को स्वीकार कर हमारे धर्म को अवैदिक मूर्तिपूजा से पृथक् करने में, उसे सच्चा वैदिक धर्म बनाने में आर्य समाज का सहयोग करना चाहिए।

'हिन्दुत्व' का श्रेष्ठ एवं सार्थक आदर्श तो आर्यत्व–वेदत्व ही हो सकता है। विशुद्ध वैदिक धर्म ही हमारा परम लक्ष्य हो सकता है। श्रद्धा और मेधा (विवेक) का सुभग समन्वय ही हमें श्रेष्ठता की ओर ले जा सकता है।

हमें महर्षि दयानन्द जी या आर्य समाज का कोई अन्ध आग्रह नहीं है। वे गौण हैं–सत्य की अपेक्षा; सत्य ही सर्वोपरि है। अतः सत्य का आग्रह अवश्य है।

अतः कृपया ठीक से सोचिए और विवेक से काम लें। मूर्तिपूजा–खण्डन से उत्तेजित होने की आवश्यकता नहीं है।

मूर्तिपूजा नहीं रही तो क्या है? हमारे पास अन्य कई सारे अच्छे और सार्थक विकल्प हैं, जैसे कि वैदिक संध्योपासना, वेदपाठ, वेदगान, वेद–स्वाध्याय, पंचमहायज्ञ, सोलह संस्कार, योगाभ्यास, प्राणायाम, गायत्री आदि मन्त्र और 'ओ३म्' आदि का अर्थ और श्रद्धापूर्वक जाप, ईश्वर–प्रणिधान आदि आदि।

अतः विचार करने की आवश्यकता है। यही हमारी प्रार्थना है।

8–17 टाउनशिप, पो. नर्मदानगर,
जि. भरूच, गुजरात – 392015
मो. 9879528247

संस्मरण

जब भगत सिंह की माता जी तथा वीर सावरकर की चरण धूली मैंने अपने माथे पर लगाई

● मामचन्द रिवाड़िया

यह घटना 1957 की है जब रामलीला मैदान में 1857 की शताब्दी का उत्सव मनाया जा रहा था। इस अवसर के मुख्य अतिथि श्री भगत सिंह जी की माताश्री तथा वीर सावरकर थे। मेरा परिवार उस समय सीताराम बाज़ार दिल्ली में रहता था। रामलीला मैदान मेरे घर के पास था। मैंने उस उत्सव में भाग लिया था। हजारों नर–नारी उपस्थित थे। मैंने उन दोनों महापुरुषों के भाषण सुने और बहुत प्रभावित हुआ। जब समाप्त हुई तब दोनों महान् आत्मायें मंच से उतर रही थी तब मैंने उनके पैरों की धूली अपने माथे पर लगाई और गौरव का अनुभव किया।

उस समय मेरे विचार में अचानक आया कि यदि मुझे कभी लंदन जाने का अवसर मिला तो मैं उस स्थान को देखना चाहूँगा जहाँ से इंग्लिश चैनल तैरकर फ्रांस गये थे। बात आती जाती रही। मैं इस विचार को भूल गया। 17.8.1980 को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली की ओर से लंदन में सम्मेलन का आयोजन किया गया। सौभाग्य से मुझे भी श्री दरबारी जी डी.ए.वी. के प्रधान, भाई श्री रामनाथ सहगल महामंत्री आर्य प्रादेशिक, नई दिल्ली तथा क्षितिज कुमार वेदालंकार सम्पादक 'आर्य जगत' के साथ लंदन जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। 20.8.1980 को हम लंदन के हीथ्रो हवाई अड्डे पहुँचे जहाँ हमारा भव्य स्वागत हुआ, लंदन में हम 21 दिन रहे। आश्चर्य की बात यह है कि जहाँ अधिवेशन होने जा रहा था उस जगह चर्च बना हुआ था, उसे खरीदकर यज्ञशाला और कमरे बनाये थे। यहाँ पर प्रतिदिन यज्ञ–हवन, भजन तथा संन्यासियों तथा आर्य विद्वानों के प्रवचन तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम होते थे। हैदराबाद के क्रान्तिकारी श्री नरेन्द्र जी का प्रवचन आज भी मेरे मस्तिक में समाया हुआ है। इन दिनों में हमने इंग्लैण्ड के प्रसिद्ध स्थानों को देखा।

नैरोबी के प्रधान श्री भारद्वाज जी का कई बार प्रवचन सुनने का अवसर मिला। वे गुरुकुल कांगड़ी के स्नातक थे और पूरी व्यवस्था के संचालक भी थे। हम चारों ने श्री दरबारी लाल, श्री रामनाथ सहगल, श्री क्षितिज कुमार वेदालंकार तथा मैंने विचार किया कि यहाँ से फ्रांस पास में है तो हमें फ्रांस एम्बेसी में जाकर कुछ दिनों के लिए वीजा बनवाना चाहिये। हम वहाँ पहुँचे। हम चारों ने वीजा के लिए फार्म भरा। तीनों को नहीं मिला, मुझे मिल गया। 7 दिन का वीजा मिला। मैंने अकेला जाना ठीक नहीं समझा। मगर तीनों के आग्रह पर मैंने स्वीकार कर लिया। 29.8.1980 को उन्होंने मुझे पानी के जहाज से पेरिस के लिए रवाना कर दिया। अगले दिन मैं पोर्ट पर उतरा। वहाँ से ट्रेन में सवार होकर पेरिस पहुंचा। मैं जब किसी से बात अँग्रेज़ी में करता तो कोई उत्तर नहीं देता। भाषा की बहुत परेशानी है। सौभाग्य से एक मारीशस का व्यक्ति मिल गया और मैंने अपनी परेशानी उसे बताई और कहा कि मेरे पास डालर कम है, कोई सस्ता होटल मिल जाए तो अच्छा होगा। वह मुझे Reception पर ले गया। उसने होटल का पता बताया और मुझे 7वीं मंजिल पर 721 नं. का कमरा मिल गया। होटल थी स्टार था लेकिन बहुत आरामदायक था। प्रातःकाल 11.30 बजे नाश्ता आया और मैंने नाश्ता किया। नाश्ते में कई चीज़ें थी और मैंने भरपेट नाश्ता किया ताकि मुझे दोपहर के भोजन पर डालर खर्च न करने पड़े। 4–5 घन्टे आराम करने के बाद मैं नीचे आया और Reception से कुछ मालुमात की। रात को मैं पेरिस घुमने के लिए पैदल निकल पड़ा। चारों तरफ रोशनी में जगमगा रही थी पेरिस। मुझे डर था कि कहीं मैं होटल का रास्ता न भूल जाऊँ। मैंने डायरी निकाली और रास्ते में जो बड़ा बोर्ड देखा उसे नोट कर लिया। रात के 9 बजे थे। भूख लग रही थी। मैंने देखा कि एक ही जगह बीफ, पिग तथा अन्य वस्तु रखी हैं। मुझे वहाँ खाना अच्छा नहीं लगा। थोड़ी दूर जाने पर एक जगह सांस्कृतिक कार्यक्रम चल रहा था। वहाँ एक दूकान पर डबल रोटी और आलू की चाट देखी। मैंने वो खाये। फिर **50 फ्रेंक** का टिकट लेकर अन्दर गया। वहां मैंने देखा कि बिल्कुल नंगा डांस हो रहा था। कुछ देर बैठा फिर बाहर आ गया और होटल वापिस आ गया। कुछ देर टी.वी. देखा और सो गया। प्रातःकाल उठा, स्नान आदि करने के बाद संध्या की और बाद में नाश्ता किया। नाश्ता करने के बाद Reception पर आया और बिल भुगतान करने के बाद मैंने किसी से मालूम किया कि यहाँ कोई मंदिर, मस्जिद, गिरजाघर है जहां मैं कुछ दिन ठहर सकता हूँ। उसने मुझे बताया कि रामाडिगोले एक जगह है जहाँ हरे रामा हरे कृष्णा का मंदिर है। उसने मुझे टैक्सी में बिठा दिया और मैं मंदिर में पहुंच गया। यह घटना जन्माष्टमी से 2 दिन पहले की थी। मंदिर में जन्माष्टमी की तैयारी हो रही थी। प्रवचन और भजन हो रहे थे। मैं भी कार्यक्रम में शामिल हो गया। जब कार्यक्रम समाप्त हुआ तब मेरी भेंट एक रामदास नामक फ्रांसिसी से हुई। वह कुछ दिन मथुरा में किसी मंदिर में ठहरा था। उसने मुझ से पूछा कि मैं कहाँ से आया हूँ। मैंने कहा मैं मथुरा में आया हूँ। दिल्ली–मथुरा पास पास है और यह मथुरा में रह चुका है। उसने कहा आप यहाँ ठहरें। मैंने ईश्वर का धन्यवाद किया और उन्होंने मुझे एक कमरे में 7 दिन के लिए ठहरा दिया। कार्यक्रम में भाग लेता और इस प्रकार की सुविधा भी।

अगले दिन श्री रामदास जी ने मुझे टूरिस्ट बस में बिठा दिया, मैंने पेरिस के मुख्य–मुख्य स्थानों को देखा। सेन नदी के तट पर ऐल्फेयर डाबर को देखा जहाँ पर संगम पिक्चर की शूटिंग हुई थी। "क्या करुँ राम मुझे बुढ़ढ़ा मिल गया" गाना गाया था। भ्रमण करने के बाद मंदिर पहुँचे। प्रवचन–भजन सुने और मैंने कृष्ण जी पर अपने विचार रखे। इस प्रकार मेरी पेरिस की यात्रा समाप्त हुई। लंदन–पेरिस की यात्राएं मैंने अपनी पुस्तक 'मेरी विदेश यात्राए' में विस्तार से वर्णन किया है।

श्री रामदास जी ने मुझे पानी के जहाज में बिठा दिया और मैं वापिस लंदन पहुँच गया। लंदन में हमने कई दर्शनीय स्थान देखे। 3.9.1980 को सब आर्य बंधु हवाई अड्डे पहुँच गये थे। हमारा ज़म्बो जहाज 11 बजे लंदन से भारत के लिए रवाना हुआ। 7400 कि.मी. की लम्बी यात्रा करके 7 घन्टे 40 मिनट पर हम दिल्ली एयर पोर्ट पर पहुँचे जहाँ मेरा भाई श्याम और बेटा सुशील मुझे लेने आये थे। मैं कुशलपूर्वक लंदन–पेरिस की यात्राएँ करके घर पहुँचा।

संस्थापक महामंत्री आर्य समाज
टैगोर गार्डन, नई दिल्ली–27
मो. 9212003162

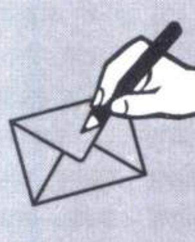

पत्र/कविता

फूलों की माला पहनना पहनाना अनुचित है

पिछले 3– 4 दशकों से आर्य समाज के कई मांगलिक अवसरों एवं समारोहों आदि में फूलों की माला पहनने पहनाने, फूलों से सजावट कर भव्यता दर्शाने का प्रचलन बढ़ रहा है जिसे हम आर्य समाज के पत्र पत्रिकाओं में छपे चित्रों में भी देखते हैं। वेद, सत्यार्थ प्रकाश, संस्कार विधि आदि में वर्णन नही है। यह सब पूर्णतः अवैदिक, आर्य समाज के नियमों के विपरीत है। आर्य समाज का सिद्धातं सदैव सादा जीवन उच्च विचार है, न कि आडबंर दिखावटीपन। यह सब पर्यावरण को दूषित करने वाला एंव विज्ञान सम्मत भी नही है।

सत्यार्थ प्रकाश के अनुसार "परमेश्वर ने पुष्पादि सुगंध, वायु – जल के दुर्गन्ध निवारण और आरोग्यता के लिये बनाये हैं, उनको पुजारी तोड़ कर नष्ट कर देते हैं। पूर्ण सुगन्ध के समय तक उसका सुगंध होता है, उसका नाश मध्य में ही कर देते हैं। पुष्पादि कीच के साथ मिल –सड़ कर उल्टा दुर्गन्ध उत्पन्न करता है।"

जब फूल तोड़ना ही पाप है, तो फूलों की गैर औषधीय उपयोग भी पाप है। जिस कार्य से किसी का अहित होता है, वह कार्य पापमय होता है। एक फूल जितने दिन पेड़ में लगा रहता है, उतने दिन उसमें सुगंधित रसायन लगातार अनवरत बनते रहते हैं जो हवा में फैल कर लाखों प्राणियों, लोगों को नसिका से ग्रहण होकर सुगंध एंव औषधिय लाभ देतें रहते हैं। इसी प्रकार एक सुगंधित फूल के खिलने के समय से पूर्ण रुप से सूखने के समय तक, जितने दिन घंटे तक पौधे में लगा रहता है उतने समय तक वह फूल हवा में निरतंर सुगंधियाँ आदि विखेरता रहता है। जिस समय फूलों को तोड़ा जाता है, उसी समय से ही सुगंध बनना बंद हो जाता है और उसका सड़न प्रक्रिया प्रारभं हो जाती है। स्वामी दयानंद जी ने इन्ही तथ्यों को ध्यान रखकर फूलों के तोड़ने को पाप लिखा है। हमें अपने जीवन शैली, समारोहों आदि में "सादा जीवन उच्च विचार" का पालन कर दिखावे, चाटुकारिता, आडबंरों आदि से दूर रहना चाहिये जिससे मन मस्तिष्क, शरीर आदि शांत रहे और कोई पापमय आचरण न हो सके।

वेद प्रकाश गुप्ता
मो. 9451734531

****

महान संत गुरु गोविन्द सिंह

आर्यवर्त्त के सब नर–नारी, जीवन सफल बनाओ तुम।
सन्त गुरु गोविन्द सिंह की, गौरव गाथा गाओ तुम।।
जाति–पाति में बंटा हुआ था, आर्यवर्त्त महान सुनों।
भाई–भाई का दुश्मन था फैला था अज्ञान सुनों।।
धूर्त विधर्मी घूम रहे थे, भारत में शैतान सुनों।
दुष्ट विदेशी शासक थे तब व्याकुल थे विद्वान् सुनों।।
"त्राहि माम" का शोर यहाँ था, समझो अरू समझाओ तुम।
सन्त गुरु गोविन्द सिंह की, गौरव गाथा गाओ तुम।।
पापी औरंगज़ेब कुचाली, जुल्म रात–दिन ढाता था।
भोली हिन्दू जनता को यह, जालिम बहुत सताता था।।
मुसलमान बनवाकर उनसे, गौ हत्या करवाता था।
उसका हुक्म टालने वाला, सज़ा मौत की पाता था।।
पढ़ो सभी इतिहास पुराना, भारी लाभ उठाओ तुम।
संत गुरु गोविन्द सिंह की, गौरव गाथा गाओ तुम।।
तेग बहादुर देव पुरुष ने, उस पापी को समझाया।
ईश्वर के हैं पुत्र सभी हम, वेदज्ञान सब दर्शाया।।
लेकिन औरंगजेब दुष्ट की, समझ नहीं कुछ भी आया।
तेग बहादुर महापुरुष का, सिर जालिम ने कटवाया।।
गुरु हुए कुर्बान धर्म पर, धर्मपाल बन जाओ तुम।
सन्त गुरु गोविन्द सिंह की, गौरव गाथा गाओ तुम।।
तेग बहादुर का बेटा गर्जा, गोविन्द सिंह रणबंका।
देश–धर्म के दीवाने ने, नहीं मौत की, की शंका।।
हो जाओ तैयार जवानो!, बजा दिया रण का डंका।
मारो–काटो हत्यारों को, फूंको दुष्टों की लंका।।
वीर बनो, बलबान बनो, दुनियाँ में नाम कमाओ तुम।
संत गुरु गोविन्द सिंह की, गौरव गाथा गाओ तुम।।
अपना तन मन और सकल धन, देश धर्म पर वार दिया।
अत्याचारी यवनों का था, योद्धा ने संहार किया।।
अपने चारों पुत्र धर्म पर, वार दिये बलधारी ने।
दानव दल को नष्ट किया, मानवता के अवतारी ने।।
भारत माँ के पुत्र–पुत्रियो! आतंकवाद मिटाओ तुम।
संत गुरु गोविन्द सिंह की, गौरव गाथा गाओ तुम।।
भारत के नेताओ तुम भी, देश भक्त बलवान बनो।
त्यागी तपधारी बन जाओ, गोविन्द सिंह समान बनो।।
मोह छोड़ दो कुर्सी का तुम, करो देश की सेवा तुम।
परोपकारी बनो, सुयश की, पाओ सच्ची मेवा तुम।।
"नन्दलाल" बन आर्य वीर अब, जग में धूम मचाओ तुम।
सन्त गुरु गोविन्द सिंह की, गौरव गाथा गाओ तुम।।

पं. नन्दलाल निर्भय
आर्य सदन बहीन,
जनपद पलवल (हरियाणा)

यह जान बूझ कर दिया गया होगा

हर 26 जनवरी पर भारत सरकार पद्मश्री आदि पुरस्कार बांटती है। इन पुरस्कारों के लिए कई लोग दौड़–धूप करते हैं। नेताओं, अफसरों और पत्रकारों से सिफारिश करवाते हैं। उन्हें लालच भी देते हैं। लेकिन कई लोग ऐसे होते हैं, जिन्हें ये पुरस्कार देने पर सरकार खुद तुली रहती है। वे इन पुरस्कारों के लिए किसी के आगे अपनी नाक नहीं रगड़ते। जब उन्हें बताया जाता है तो ज्यादातर लोग इन पुरस्कारों को सहर्ष स्वीकार कर लेते हैं और अपने आप को भाग्यशाली समझते हैं।

देश में ऐसे लोग भी हैं, जो इस तरह के पुरस्कारों को लेने से मना कर देते हैं। उनका तर्क यह भी होता है कि मैं तो पुरस्कार के योग्य हूं लेकिन पुरस्कार देनेवाले की योग्यता क्या है? ऐसे पुरस्कारों की प्रामाणिकता या प्रतिष्ठा क्या है?

खैर, इस बार दो खास मुसलमानों–अदनान सामी और रमजान खान को पद्मश्री पुरस्कार देने की घोषणा हुई। यों तो आजकल लोग इन सरकारी पुरस्कारों पर ज्यादा ध्यान नहीं देते लेकिन इन दोनों पुरस्कारों पर मेरा ध्यान भी गया। अदनान सामी अच्छे गायक हैं लेकिन उन्होंने इस पुरस्कार के लिए अपने आप को कतार में खड़ा किया होगा, इसमें मुझे शक है। यह उन्हें जान–बूझकर दिया गया होगा? क्यों दिया गया होगा? शायद ऐसा प्रभाव पैदा किया जा रहा है सरकार मुसलमान–विरोधी नहीं है। यही बात रमजान खान के बारे में भी लागू होती है। उसने नए नागरिकता कानून के बहाने घर बैठे जो मुसीबत मोल ले ली है, इससे शायद उसे राहत मिलने की उम्मीद रही होगी।

सामी, जिनके पिता पाकिस्तानी हैं, उन्हें भारत की नागरिकता भी दी गई है। रमजान खान का मामला तो और भी मजेदार हैं। वे अपने भरण–पोषण के लिए राजस्थान के मंदिरों और हिंदू कार्यक्रमों में भजन गाते हैं। गोसेवा भी करते हैं। ऐसे व्यक्ति को बिना मांगे पद्मश्री देकर यह हिंदूवादी सरकार अपनी उदारवादी छवि भी बना रही है लेकिन लोग पूछेंगे कि रमजान खान के बेटे फिरोज खान को अपनी नौकरी क्यों छोड़नी पड़ी? उसे बनारस हिंदू यूनिवर्सिटी में संस्कृत क्यों नहीं पढ़ाने दी गई? तब इस सरकार ने हस्तक्षेप क्यों नहीं किया? वैचारिक दिग्भ्रम बने रहने के कारण ऐसे सही और गलत काम एक साथ होते रहते हैं।

डॉ. वेदप्रताप वैदिक
dr.vaidik@gmil.com

****

आर्य समाज ने यज्ञ करके मनाई लाला लाजपत राय की जयंति

जिला आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से लाला लाजपत राय सर्किल शॉपिंग सेंटर पर प्रसिद्ध स्वतंत्रता सैनानी लाला लाजपत राय की जयंति मनाई गई और यज्ञ कर उन्हें श्रृद्धांजलि अर्पित की गई। यज्ञ के मुख्य यजमान आर्य समाज तलवंडी के फाउंडर श्री योगराज कुमरा रहे। यज्ञ के ब्रम्हा श्री भैरूलाल आर्य ने वेद मंत्रों के साथ यज्ञ में आहुतियां डलवाई।

कार्यक्रम की मुख्य अतिथि कोटा नगर निगम की पूर्व महापौर श्रीमती सुमन श्रृंगी थीं तथा अध्यक्षता सभा के पूर्व जिला प्रधान श्री अर्जुनदेव चड्ढा ने की।

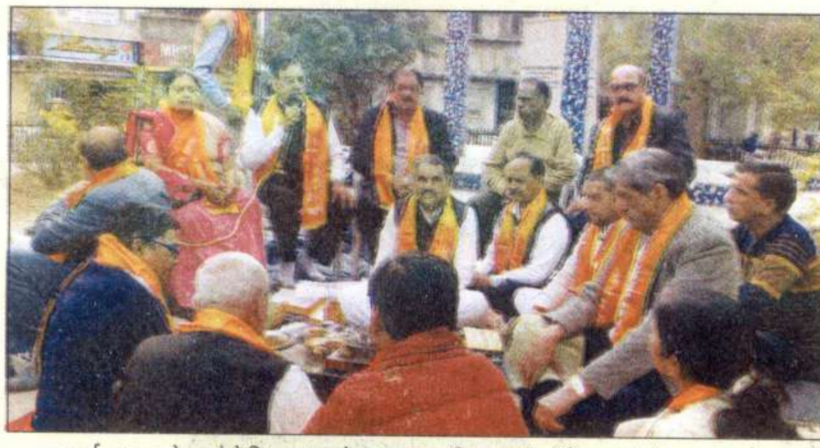

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि सुमन श्रृंगी ने कहा कि लाला लाजपत राय की स्वतंत्रता संग्राम में महती भूमिका रही और उन्होनें अपने जीवन का बलिदान देकर हमारे सामने देश रक्षा का महत्वपूर्ण उद्देश्य प्रस्तुत किया।

जिला आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व जिला प्रधान श्री अर्जुनदेव चड्ढा ने कहा कि लाला लाजपत राय आर्य समाज को अपनी माता व ऋषि दयानंद को अपना धर्मपिता मानते थे। उन्होंने अपनी कोठी बेचकर पंजाब नेशनल बैंक की स्थापना की थी। लाला लाजपत राय ने दलित उद्धार का बहुत काम किया और पंजाब में किसानों के हित में एक आंदोलन 'पंगड़ी संभाल जट्टा' अभियान चलाया। लालाजी ने पंजाब में महिला उत्थान के बहुत काम किए। स्वतंत्र भारत उनके बलिदान का हमेशा ऋणी रहेगा।

आर्य समाज वसन्त कुंज, दिल्ली में पारिवारिक मिलन और सत्संग आयोजित

आर्य समाज वसन्त कुंज, नई दिल्ली के प्रधान श्री पी. सी.बक्शी का प्रयास है कि समाज के सभी सदस्य सपरिवार और आसपास के सभी निवासी आर्य समाज से जुड़ें। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए आर्य समाज वसन्त कुंज में एक विशेष पारिवारिक मिलन व सत्संग कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

इस सत्संग में विभिन्न आयु वर्ग के लोगों ने बढ़ चढ़ कर भाग लिया। कु. चाहत मलिक तथा सुश्री आस्था सदृश कई

युवाओं ने आर्य समाज को आधुनिक बनाने का प्रस्ताव पेश किया।

इस अवसर पर दक्षिणी दिल्ली नगर निगम के युवा पार्षद श्री मनोज अहलावत व भूतपूर्व मेयर श्रीमती सरिता चौधरी भी विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थीं। इन दोनों अतिथियों ने आने वाले दिनों में आर्य समाज को अपना भरपूर सहयोग देने का आश्वासन दिया ।

संगीतज्ञ देव आचार्य व वसुनीथ ने आर्य समाज के भजनों की मनमोहक प्रस्तुति दी। सत्संग शान्तिपाठ एवं ऋषि लंगर के साथ समाप्त हुआ।

आर्यसमाज, कैंनालरोड-राजपुर, देहरादून का प्रथम वार्षिकोत्सव समापन

आर्यसमाज, कैनालरोड–राजपुर, देहरादून के प्रथम वार्षिकोत्सव के समापन समारोह में गुरुकुल पौंधा के आचार्य डा. धनंजय आर्य ने देश की सुरक्षा की चर्चा करते हुए कहा कि यदि राष्ट्र निरुपद्रव होगा तभी हम सुरक्षित रह सकते हैं। उन्होंने कहा कि गृहस्थाश्रम प्रकरण में एक वेदमन्त्र आता है जिसमें आचार्य वर–वधू को उपदेश करते हुए बताते हैं कि विवाह प्रजा की उत्पत्ति व उन्नति के लिये किया जाता है। प्रजा की उत्पत्ति राष्ट्र वा समाज के निर्माण के लिये की जाती है। आचार्य जी ने कहा कि अपने साथ रखना चाहिये। इसके साथ हमारे पास

सत्यार्थप्रकाश ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका एवं संस्कारविधि हमेशा होनी चाहिये। यह तीन ग्रन्थ अस्त्रों के समान हैं। इन ग्रन्थों को पढ़ने से व्यक्ति असत्य, अज्ञान व भ्रम की निवृत्ति होकर वह सद्ज्ञान सहित ईश्वर के सत्यस्वरूप को प्राप्त होकर ईश्वर का साक्षात्कार करने में ही सफल होता है।

विद्वान आचार्य ने देश के लिये युवावस्था में शहीद हुए कान्तिकारियों के नामों का उल्लेख किया और कहा कि उनके तप व बलिदान के कार्यों के कारण ही देश स्वतन्त्र हुआ था। आजादी मात्र अहिंसात्मक आन्दोलन से प्राप्त नहीं हुई। देश ने अपने कान्तिकारियों को उचित सम्मान नहीं दिया। आचार्य जी ने कहा कि हमें राष्ट्र के निर्माण की भावनाओं से सराबोर होना है। राष्ट्रवादी भावनायें हमारे लिये आदर्श होनी चाहियें। हमें इनके लिये संकल्पित होना चाहिये। यह कहकर आचार्य जी ने अपने वक्तव्य को विराम दिया। ओ३म् शम्।

☞ पृष्ठ 01 का शेष

डी.ए.वी. सैक्टर–49 ...

कई अवधारणाएँ स्पष्ट हुई।

इस कार्यशाला के मुख्य अतिथि सीबीएसई स्किल डेवेलपमेंट के डायरेक्टर डा. विश्वजीत शाह तथा सीबीएसई ट्रेनिंग के ज्वाइंट सक्रेटरी श्री संदीप जैन जी ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए उन्हें उज्ज्वल भविष्य की तैयारी के लिए प्रेरित किया।

विद्यालय की प्रधानाचार्या श्रीमती चारु मैनी ने वहाँ उपस्थित सभी लोगों का धन्यवाद किया और सभी प्रतिभागियों को इस बात के लिए प्रेरित किया कि वे तकनीकों का सदुपयोग अपने सुविधाजनक एवं सुरक्षित जीवन के लिए करें ।

☞ पृष्ठ 01 का शेष

आर्य समाज नकोदर ...

कलां, डी.ए.वी. कॉलेज नकोदर के छात्रों ने बढ़–चढ़कर भाग लिया।

शोभा यात्रा में आर्य समाज से संबंधित विभिन्न झाकियों को प्रदर्शन भी किया गया। छात्रों द्वारा आर्य समाज से संबंधित भजन व धार्मिक गीत गाए गए। कॉलेज के एन.एस.एस. वालंटियरों ने शोभा यात्रा के दौरान शहर की सफाई का अभ्यान जारी रखा।

प्रिंसिपल डॉ. अनूप कुमार ने कहा कि कॉलेज की 50वीं वर्षागांठ के मौके पर आर्य समाज व डी.ए.वी. शैक्षणिक संस्थाओं द्वारा सदभावना, स्वच्छता व सामाजिक विकास के लिए बढ़–चढ़कर कार्य किए जा रहे हैं और यह शोभा यात्रा भी उन्हीं कार्यों का एक भाग है।

Registration No. R.N.I. 39\57
Delhi Postal R. No. D.L. (ND)-11\6066\2018-20
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसैंस नं. U(C)-103\2018-20
Posted at N.D.P.S.O. ON 05/06-02-2020

आर आर बावा डी.ए.वी. बटाला में हुआ वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह

आर आर बावा डी.ए.वी. कॉलेज फॉर गर्ल्ज़, बटाला में वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह हर्षोल्लास के साथ आयोजित किया गया।

इस अवसर पर श्री बाल कृष्ण मित्तल, सचिव डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति, नई दिल्ली सपत्नीक मुख्यातिथि स्वरूप पधारे।

कार्यक्रम का शुभारम्भ ज्योति प्रज्ज्वलन एवं डी.ए.वी. गान से किया गया। संगीत विभाग की छात्राओं ने भजन गायन प्रस्तुत करके ईश्वरीय वन्दना करके कार्यक्रम की शुरुआत की। प्राचार्या महोदया ने कॉलेज की उपलब्धियों की वार्षिक रिर्पोट प्रस्तुत की। उन्होंने कॉलेज के उत्कृष्ट परिणामों का विहगमालोकन प्रस्तुत किया। मुख्यातिथि द्वारा 326 छात्राओं को अपने कर कमलों द्वारा सम्मानित किया गया।

श्री बाल कृष्ण मित्तल ने छात्राओं को पुरस्कार प्राप्त करने के लिए मुबारकबाद दी एवं भविष्य में भी उन्नति के शिखर को छूने के लिए शुभकामनाएँ प्रकट की। उन्होंने कहा कि 135 वर्ष पूर्व लाहौर में डी.ए.वी. स्कूल एवं कॉलेज की स्थापना हुई थी, डी.ए.वी. इस समय लगभग 930 स्कूल–कॉलेजों एवं यूनिवर्सिटी के द्वारा विद्या प्रदान कर रहा है। नारी–सशक्तिकरण में आर आर बावा अहम योगदान दे रहा है।

संगीत विभाग की छात्राओं ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। मुख्यातिथि ने कॉलेज की वार्षिक पत्रिका 'विद्योत्तमा' एवं समाचार पत्रिका 'नव्य दृष्टि' का विमोचन भी किया गया। इस अवसर पर डी.ए.वी. संस्थाओं के प्राचार्य–प्राचार्या भी उपस्थित थे।

श्री राजेश कवात्रा वरिष्ठ सदस्य स्थानीय समिति ने सभी का धन्यवाद किया और सभी छात्राओं के प्रति शुभकामनाएँ प्रकट कीं।

राष्ट्रगान के साथ इस समारोह का समापन हुआ।

डी.ए.वी समाना में बच्चों के लिए आयोजित हुआ करियर काउंसलिंग सेशन

डी.ए.वी समाना में बच्चों को उनकी रूचि और रुझान से अवगत करवाने के लिए करियर काउंसलिंग सेशन का आयोजन किया गया। इस सेशन में श्री सोनी गोयल (आई.आई.एम अहमदाबाद) (डायरेक्टर, प्रयास – सामाजिक संगठन– बठिंडा) विशेषज्ञ के रूप में पधारे जोकि बड़े काबिल एवं एक सुलझे हुए मार्गदर्शक हैं। उन्होंने वहाँ उपस्थित सभी बच्चों को उनके आगामी भविष्य सम्बन्धी

अनेकों सुझाव दिए तथा बच्चों के प्रश्नों के हल बताए। उन्होंने हर क्षेत्र के प्रति बच्चों का उदाहरण सहित निर्देशन किया चाहे डॉक्टरी हो, इंजीनियरिंग हो या बिजनेस का क्षेत्र हो। इस अवसर पर स्कूल के प्रधानाचार्य डॉ. मोहनलाल शर्मा ने आए हुए विशेषज्ञों का अभिनंदन एवं धन्यवाद किया तथा कहा कि स्कूल प्रशासन सदा ही बच्चों के भविष्य के लिए प्रयासरत है तथा उन्हें ऐसी सेवाएँ प्रदान करता रहेगा।

डी.ए.वी. मनाली के छात्रों ने चलाया ध्वनि प्रदूषण जागरूकता अभियान

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल मनाली के छात्रों व अध्यापकों ने प्रदेश में हो रहे ध्वनि प्रदूषण के खिलाफ जनता को जागरूक किया। जिसमें छात्रों ने सड़क पर उतर कर वाहन चालकों को पेम्फलेट और नो हॉर्न के स्टीकर बाँटकर जागरूक किया। इसी संदर्भ में विज्ञान अध्यापक श्री रवि कुमार ने कक्षा में विद्यार्थियों को प्रेरित किया कि अपने अभिभावकों व रिश्तेदारों को

वाहन चलाते समय हॉर्न न बजाने के लिए बताएँ व ध्वनि प्रदूषण से होने वाले नुकसान को छात्रों के समक्ष रखा।

विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री आर. एस. राणा ने भी विद्यार्थियों और अध्यापकों को ध्वनि प्रदूषण से होने वाले नुकसान से अवगत करवाया। विद्यालय में समय–समय पर पर्यावरण के प्रति जागरूक रहने के लिए छात्रों को गतिविधियाँ करवाई जाती हैं।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा मंदिर मार्ग के लिए **एस.के शर्मा** द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित **अरावली प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स (प्रा.) लि.,** डब्ल्यू–30, ओखला, फेस–II, नई दिल्ली–110020 (दूरभाष : 26388830–32) से मुद्रित एवं कार्यालय **'आर्य जगत्'** आर्यसमाज भवन मंदिर मार्ग नई दिल्ली से प्रकाशित मो.–9868894601, 23362110, 23360059 सम्पादक – **पूनम सूरी**